ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 2 अंक : 6 अगस्त-सितम्बर 2012 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ॥
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ॥
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

अजा (प्रबोधिनी) एकादशी	डा. महेश पारासर	2
कैसे करें नवरात्रि साधना	डा. रचना भारद्वाज	4
खाने के शौकीन होते हैं कर्क लग्न वाले	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) की महत्वताा	श्रीमती कविता अगरवाल	6
हरितालिका व्रत	पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
अर्पण और तर्पण का पर्व पितृपक्ष	पं. अजय दत्ता	8
मौत के बाद सपनों में अपने	मोनिका गुप्ता	9
अखिर क्यों ढका जाता है सिर, पूजा करते समय	पं. दयानन्द शास्त्री	9
त्वचा की प्रकृति और आपका व्यक्तित्व	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	10
शनि की महिमा–पहले जाने फिर माने	डा. श्रीमती रेखा जैन (आस्था)	11
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	12–13
स्वास्थ्य हेतु आहार की भूमिका	शैली शर्मा	14
'लोभी नाई'	विजय शर्मा	15
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। RNI No. UPHIN 41286/24/1/2010-TC

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

अजा (प्रबोधिनी) एकादशी

प्रबोधिनी एकादशी भाद्रपद मास में कृष्णपक्ष की एकादशी को मनायी जाती है। इस एकादशी को कई नामों से पुकारा जाता है। जैसे–प्रबोधिनी, जया, कामिनी और अजा। इस दिन विष्णु भगवान की उपासना की जाती है। रात में जागरण करने और व्रत रखने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं।

अजा एकादशी की कथा– एक बार सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में ऋषि विश्वामित्र को अपना राज्य दान कर दिया। अगले दिन ऋषि विश्वामित्र दरबार में गये तो राजा ने सचमुच में अपना सारा राजपाट सौंप दिया। ऋषि ने उनसे दक्षिणा की पाँच सौ स्वर्ण मुद्राएँ और मांगी। दक्षिणा चुको के लिये राजा को अपनी पत्नी, पुत्र और खुद को बेचना पड़ा। राजा हरिश्चन्द्र को एक डोम ने खरीदा था। डोम ने राजा को हरिश्चन्द्र को शमशान में नियुक्त किया। और उन्हें यह कार्य सौंपा कि वह मृतकों के सम्बन्धियों से कर लेकर शवदाह करें। उन्हें यह कार्य करते हुए जब अधिक वर्ष बीत गये, तक अचानक ही उनकी भेंट गौतम ऋषि से हुई। राजा ने गौतम ऋषि को अपनी सारी आपबीत सुनाई। तब मुनि ने उन्हें इसी अजा एकादशी का व्रत करने की सलह दी थी। राजा ने यह व्रत करना आरम्भ कर दिया। इसी बीच उनके पुत्र रोहिताश को सर्प के डसने से स्वर्गवास हो गया। जब उसकी माता अपने पुत्र को अन्तिम संस्कार हेतु शमशान पर लेकर आयी तो राजा हरिश्चन्द्र ने उससे शमशान का कर मांगा। परन्तु उसके पास शमशान कर चुकाने के लिये कुछ भी नहीं था। उसने अपनी चुन्दरी का आधा भाग देकर शमशान का कर चुकाया। तत्काल आकाश में बिजली चमकी और प्रभु प्रकट होकर बोले–"महाराज!तुमने सत्य को जीवन में धारण करके उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किया हैं। अतः तुम्हारी कर्तव्यनिष्ठा धन्य है। तुम इतिहास में सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के नाम से अमर रहोंगे" भगवत्कृपा से रोहिताश जीवित हो गया। तीनों प्राणी चिरकाल तक सुख भोगकर अन्त में स्वर्ग को चले गये।

बछवारस (वत्स द्वादशी) :– द्वादशी बछवारस भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी को मनायी जाती है। इस दिन स्त्रियाँ मूँग, मोठ तथा बाजरा अंकुरित करके मध्यान्ह के समय बछड़े को खिलाती हैं। व्रती भी इस दिन उपरोक्त अन्न का ही सेवन करता है। इस दिन गाय का दूध–दही सेवन नहीं करना चाहिए। इस दिन भैंस के दूध, दही का प्रयोग लाभकर होता है। भाद्र का महीना आया। बछबारस आयी। इन्द्र की इन्द्राणियां पूजा करने के लिए धरती परआई, तो उनको गाय दिखी। गाय की पूजा करने लगे। आगे से पूजा करे तो गाय सींग मारती और पीछे सकेरे तो लातों से मारती।

इन्द्राणियां बोली "हम तो तुम्हें पूज रहे है और तू हमें मारती है।" गाय बोली–मुझे अकेली को क्यो पूजते हों, बछड़ा व गाय दोनों की पूजा करो। इन्द्र की इन्द्राणियों ने दर्भ का बच्चा बनाया। गाय के पास बैठाया अमृत के छींटे दिये। गाय के पास आते ही बछड़ा जीवित हो गया और गाय का दूध पीने लगा। इन्द्राणियों ने उनकी पूजा की। फिर गाय बछड़े को लेकर घर आयी। गाय के साथ बछड़ा देखकर मालकिन ने उसे घर में घुसने नहीं दिया। वो गाय को कहने लगी। मेरे तो बच्चा नहीं है, तू मेरे बच्चा लाई है। मेरे बच्चा लायेगी तो तुझे अन्दर आने दूंगी। गाय बोली–"अभी तो मुझे घर में ले लो अगली बछबारस को मैं तुझे बेटा दूंगी। "अगली बछबारस आई। गाय वन में गई। इन्द्राणियां पूजा करने लगी। तो गाय पूजा नहीं करने दे रही थी, मार रही थी तो इन्द्राणियां बोली अब क्या चाहिए?" गाये बोली, पिछले साल मेरे बच्दा दिया अब मेरी मालकिन को भी बच्चा दो नहीं तो वो मुझे घर नहीं आने देगी। तभी मैं तुमको पूजा करने दूंगी।" तो इन्द्र की इन्द्राणियों ने दर्भ का बच्चा बनाया दर्भ का पालणा बनाया। पालने को गाय के सींगों से बांधा उसमें बच्चे को लिटाया और संजीवनी का छींटा दिया।फिर इन्द्राणियों ने गाय की पूजा करी। गाय बच्चे को लेके घर गई तो सारी औरतें कहने लगी, सेठानी तेरे लिये तेरी गाय बच्चा लाई है। सेठानी ने गाय को गाजे–बाजे से सामने लिया।गाय माता ने सेठानी को बच्चा दिया। वैसे सबको देना, भरापूरा रखना खोटी की खरी, अधूरी की पूरी।

वत्स द्वादशी की कथा– भाद्रपद की कृष्ण पक्ष की द्वादशी को पहली श्री कृष्ण को माता यशोदा ने अच्छी प्रकार से सजाकर और

पूजा पाठ आदि करा के गौएं और बछड़े चराने भेजा था। पूजा–पाठ के बाद कृष्ण ने सभी बछड़े खोल दिये। चिंता दिखाते हुए यशोदा ने बलराम से कहा, "बछड़ों को चराने दूर मत निकल जाना। श्रीकृष्ण को अकेले मत छोड़ना।" श्रीकृष्ण द्वारा गोवत्सचारण की इस पुण्य तिथि को पर्व के रुप में मनाया जाता है।

महेश पारासर

अमृत वचन

एक दर्शनशास्त्र का प्रोफेसर धर्म व दर्शन पर बहुत अच्छा प्रवचन दे सकता है। किन्तु उसका स्वंय का जीवन सन्तमय नहीं होता है। उसके सानिध्य से कोई लाभ नहीं होता। जिसकी रक्षा तुम्हें करनी पड़े वह तुम्हारा रक्षक नहीं हो सकता।

पाठकों के पत्र

श्रृदेय गुरुजी, सादर नमस्कार

मैंनें भविष्य निर्णय के कुछ अंक पढ़े। मुझे इनसे बहुत सी अमूल्य जानकारी प्राप्त हुई। आपकी पत्रिका ज्योतिष की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। आपकी पत्रिका में प्रकाशित भविष्यफल बहुत सटीक बैठता है। आपकी पत्रिका के उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

मानशी अग्रवाल, मुम्बई

आदरणीय पारासर जी

ज्योतिष वह विज्ञान है जो भूत, वर्तमान और भविष्य की जानकारी प्रदान करता है। ज्योतिष के क्षेत्र में आपकी भविष्य निर्णय द्विमासिक पत्रिका अपना एक अलग स्थान प्राप्त करेगी, मेरा पूर्ण विश्वास है। पत्रिका में प्रकाशित लेख ज्ञान में तो वृद्धि करते ही है साथ ही समस्याओं के समाधान का मार्ग दिखाते है। जिसके लिए आपको व आपकी टीम को कोटि–2 प्रणाम।

सधन्यवाद

श्री रामअवतार शर्मा बुलन्दशहर

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न– कर्जमुक्ती का उपाय बतायें? आपकी अतिकृपा होगी।

उत्तर– वर्तमान में आपकी शनि की महादशा चल रही है। समय गोचरानुसार भी अनुकूल नही है। शनि की पूजा व दान करें। पक्षियों को दाना चुगायें। ऋणमुक्ति यंत्र व मंत्र की उपासना लाभ देगी। **आदित्य सारस्वत, आगरा।**

प्रश्न– व्यापार में घाटा चल रहा हैं बहुत परेशान हुँ उपाय बतायें? **मधुर गुप्ता, सिरसागंज।**

उत्तर– आपकी समस्या के समाधान के लिए ये उपाय करें–

1. रोजाना सूर्य भगवान् को ताबें के बर्तन से अर्घ दें।
2. ऋणमुक्ति यंत्र अपने पास रखें एवं त्रिकोण मंगल यंत्र की रोजाना पूजा करें।
3. पुखराज रत्न तर्जनी उगली में गुरुबार से धारण करें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– एक वर्ष पूर्व मैंने काफी समय से बन्द एक मकान खरीदा ततपश्चात उसकी मरम्मत करवा कर वहाँ निवास करना शुरू किया। जब से उस मकान में रहने पहुँचा हूँ, लगभग सभी लोग बीमार रहते है, मुझे भी ढंग से नींद नही आती, कुछ लोग कहते हैं कि यह मकान ठीक नही है। मकान का नक्शा भेज रहा हूँ। सही मार्गदर्शन करें।

नेहा सिकरवार, शिकोहाबाद

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपके मकान में ईशान कोण में बने हुए शौचालय ठीक नहीं है। आप इनको वहाँ से मध्य पश्चिम दिशा की ओर स्थानान्तिरत करें इसके अतिरिक्त आपके मकान के नैॠत्य कोण में जो स्थान खाली है वह काफी नीचा है उस क्षेत्र को ऊंचा करें तथा वहाँ सम्भव हो तो कमरा बनावायें आप बस इन दोनों कमियों को दूर करें। शीर्घ लाभ मिलेगा। यदि सम्भव हो तो रोजाना सुबह शाम गायत्री मंत्र की कैसिट घर मे बजाया करें।

समस्याः– मेरे व मेरे पति के रिश्ते दिन प्रति दनि खराब होते जा रहे हैं। अपने मकान का कच्चा नक्शा हाथ से बना कर तथा हम दोनों की कुण्ड़ली प्रेषित कर रही हूँ। कारण व उपाय बतायें।

रोजा फडकर, कल्याण।

समाधानः– वास्तुशास्त्र के अनुसार आपका बेड़रूम आग्नेय कोण में स्थित है यह ठीक नही हैं। आप अपना बेड़रूम आग्नेय कोण से हटाकर नैॠत्य कोण में ले जायें अपने घर के शौचालय को मध्य पश्चिम या फिर उत्तर–पश्चिम में स्थानान्तरित करें। ईशान कोण में एक गणेश जी की मूर्ति की फिर तस्वीर लगायें तथा रसोई घर को नैॠत्य कोण से हटाकर तुरन्त आग्नेय कोण में ले जायें। इससे काफी राहत मिलेगी। जहाँ तक सवाल दोनों की कुण्ड़ली का है तो आप तुरन्त एक पन्ना धारण करें तथा अपने पति को एक गोमेद धारण करवायें। चमत्कारिक लाभ प्राप्त होगा। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

कैसे करें नवरात्रि साधना

डा. रचना के भारद्वाज

वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद

नई दिल्ली

नवरात्र में नौ रुपों में माँ भगवती की उपासना की जाती है। नवरात्र देवपर्व है, उसमें देवत्व की प्रेरणा और देवी अनुकम्पा बरसाती है। जिस प्रकार प्रातःकाल की उपासना अधिक फलीभूत होती है और संध्या के नाम से अभिहित की जाती है, उसी प्रकार नवरात्रियों का समय भी विशेष फल देने वाला माना गया है।

नवरात्रि पर्व वर्ष भर मं दो बार आता है।

1. चैत्र शुक्ल चैत्र नवरात्रि जिस दिन आरंभ होती है, उसी दिन विक्रमी संवत् का नया वर्ष प्रारंभ होता है। विक्रमादित्य राजा होने के साथ ही जनहित–लोकमंगल के लिए समर्पित साधक भी थे। उनकी आदर्शनिष्ठा की झलक सिंहासन बत्तीसी की पुस्तकों में मिलती है। लोकमानस और शासन तंत्र के आदर्श समन्वय के प्रतीत के रुप में उन्हें मान्यता दी गई और उनके राज्यभिषेक को नवीन संवत्सर से जोड़ कर उनकी कीर्ति को अमर बना दिया गया। इसी प्रकार चैत्र नवरात्रि का समापन दिवस भगवान राम का जन्म दिन रामनवमी होता है।

2. दूसरी नवरात्रि आश्विन शुक्ल एक से नौ तक पड़ती है। इससे लगा हुआ विजयदशमी पर्व आता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नक्षत्रों की गणना आविश्न नक्षत्र से प्रारंभ होती है। इस आधार पर आश्विन मास ज्योतिष नक्षत्र वर्ष का प्रथम मास माना जाता है।

इस प्रकार दोनों नवरात्रि पर्वो के साथ नये शुभारंभ की भावना, मान्यता जुड़ी हुई है। दोनों में छः मास का अंतर है। यह साधना पर्व वर्ष को दो भागों में बांटते हैं। ऋतुओं के संधिकाल इन्हीं पर्वो पर पड़ते हैं। सन्धिकाल को उपासना की दृष्टि से सर्वाधिक महत्व दिया गया है। प्रातः और सांय, ब्रह्ममुहूर्त एवं गोधूलि वेला दिन और रात्रि के संधिकाल हैं। इन्हें उपासना के लिए उपयुक्त माना गया है। इसी प्रकार ऋतु संधिकाल के नौ–नौ दिन दोनों नवरात्रियों में विशिष्ट रुप से साधना–अनुष्ठानों के लिए महत्वपूर्ण माने गये है। नवरात्रि पर्व के साथ दुर्गावतरण की कथा भी जुड़ी है।

वर्तमान समय, युग सन्धिकाल के रुप में तत्वदर्शियों ने

स्वीकारा है। युग की भयावह समस्याओं से मुक्ति के लिए युग शक्ति के उद्‌भव की कामना सभी के मनों में उठती है। ऐसी स्थिति में व्यक्तिगत साधना की अपेक्षा सामूहिक साधना अनुष्ठानों का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। इसीलिए युग निर्माण अभियान के सूत्र संचालकों ने हर भावनाशील से अपेक्षा की हैं कि नवरात्रि पर्व पर सामूहिक साधना अनुष्ठानों के लिए विशेष रुप से प्रयास करें।

शक्तिपीठ, प्रज्ञा संस्थान एवं शाखा संगठनों को तो ये उत्तरदायित्व विशेष रुप से सौंपे गये हैं। जहां दो–चार परिजन भी होते हैं वहां भी नवरात्रियों पर सामूहिक साधना–अनुष्ठान की व्यवस्था बना लेते हैं। जो किसी मजबूरी में अपना अनुष्ठान घर पर करते हों, वे भी सायंकाल सत्संग–आरती में तथा पूर्णाहुति के दिन सामूहिक क्रम में ही शामिल होते हैं। ऐसे प्रयास सभी साधक करें।

व्यवस्था क्रम– सामूहिक साधना के लिए कोई सार्वजनिक स्थल चुना जा सकता है, किसी के व्यक्तिगत स्थान को भी उपयोग किया जा सकता है, किसी के व्यक्तिगत स्थान का ाी उपयोग किया जा सकता है। स्थान ऐसा हो, जहां अपनी सहज गतिविधियों से दूसरों को तथा उनकी गतिविधियों से अपने साधना क्रम में अड़चन पैदा न हो। स्थान इतना होना चाहिए कि देव स्थापना और सामूहिक उपासना के लिए जगह की तंगी न पड़े। साधना स्थल पर गायत्री माता का चित्र, कलश, दीपक आदि सजाये जाएं। सामूहिक साधना स्थल पर जौ बौने से पवित्रता एवं सुदंरता का संचार होता है। जौ एक–दो दिन पहले भी बोये जा सकते हैं। बोने से पूर्व उन्हें चौबीस घंटे भिगों दिया जाय, तो अंकुर जल्दी निकल आते हैं।

सामूहिक साधना के लिए कई दिन पहले से ही जन संपर्क द्वारा साधकों की संख्या बढ़ाने का प्रयास करना चाहिए। प्रेरणा देने, प्रभाव बतलाने और स्नेह भरे आग्रह, प्रोत्साहन का क्रम अपनाने से कमजोर संकल्प वाले भी साधना का लाभ उठाने लगते हैं। नौं दिन में सत्ताईस माला नित्य करने से 24000 मंत्र होते हैं। जिनसे न बन पड़े वे बारह माला नित्य करके 108 माला का अनुष्ठान कर सकते हैं।

साधना काल में अस्वाद व्रत, एक समय अन्नाहार, शाक, फल जैसे सुगम उपवास का क्रम अपनाने ब्रह्मचर्य का पालन करने, चमड़े के जूतों का उपयोग न करने, चारपाई पर न सोने, अपने कार्य स्वयं करने जैसी सर्वसुलभ तप–तितिक्षा अपनाने की बात सब को ध्यान में रखनी चाहिए। जिस दिन से नवरात्रि प्रारंभ हो, उस दिन प्रातः काल या उसके एक दिन पहले शाम को सामूहिक संकल्प की

शेष पेज 17 **पर...............**

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property

Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja

Horoscope, Match Making & Varshphal

Mon to Thu12 PM to 6 PM

भविष्य दर्शन®

Dr. Rachna K Bhardwaj

Consultant of Astrology & Vastu

East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756

H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666

खाने के शौकीन होते हैं कर्क लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

आज बारी है कर्क लग्न की। कर्क काल पुरुष की चौथी राशि होती है। कर्क राशि पुनर्वसु के एक चरण पुष्य के चार चरण और आश्लेषा के चरणों से मिलकर बनी है। यह उत्तर दिशा की परिचारिका है। इस लग्न का स्वामी चंद्रमा होता है, चंद्र के पास केवल एक ही राशि कर्क का अधिपत्य प्राप्त होता है। इसीलिए इस लग्न वालों का लग्नेश चन्द्रमा है। इसी राशि में गुरु आकर उच्च के हो जाते हैं। और यहीं पर मंगल आने के बाद नीच के हो जाते हैं।

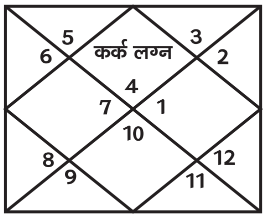

इस लग्न वाले व्यक्तियों की आंखों की पुतली प्रायः काली कम होती है। इनका शरीर का रंग भी साफ होता है। कर्क लग्न वाले व्यक्ति को मोटापे के प्रति बहुत ही सावधान रहना चाहिए।

भावुकता, अपार जिज्ञासा, विलासिता, व्यापार दक्षता इनमें कूट–कूट के भरी होती है। इस लग्न का जातक भोजन का बहुत शौकीन होता है। ऐसे व्यक्तियों को कहां कौन सी खाने की चीज मशहूर है इन्हें इसकी जानकारी रहती है। इन्हें आभूषणों के संग्रह का भी शौक होता है। कर्क वाला व्यक्ति ऐसी चीजों का संग्रह करता रहता है जो भविष्य में मूल्यवान हो सकें। कर्क जातक रत्नों को एकत्र करता है भले यह रत्न वस्तु हों या फिर कोई मनुष्य।ऐसे जातक कठोर और कटु वचन से घृणा करते हैं लेकिन इनको सामने वाले को अक्सर इन्हीं चीजों से गुजरना पड़ जाता है। यह अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और पुज्यजनों का सम्मान करने वाला होता है। कर्क लग्न के जातकों में अपने सपने का साकार करने की क्षमता होती है। इस लग्न के व्यक्ति विपरीत योनि के प्रति सहज ही आकृर्षित हो जाते हैं। इनमें मित्रों के प्रति बहुत प्रेम और उदारता होती है। इस लग्न के जातकों को घूमने में बहुत मजा आता है। बैठे–बैठे अचानक बाहर जाने का कार्यक्रम बना लेना इनके बायें हाथ का काम है। इन्हें अपने ड्रायंग रुम को सुसज्जित रखने की प्रबल इच्छा रहती है। इन जातकों का जन संपर्क भी बहुत ज्यादा होता है। भगवान राम की कुंडली भी कर्क लग्न की थी। एक बात ठीक से समझ लेनी चाहिए कि व्यक्ति को जो लग्न मिलती है उसके पीछे जन्मों–जन्मों के कर्म होते हैं और जिस लग्न में भगवान राम ने अवतार लिया हो वह कोई मामूली लग्न नहीं हो सकती है। काल पुरुष की कुंडली में चतुर्थ भाव की राशि होने के कारण सुख समृद्धि, निवास स्थान और जन संपर्क बहुत उच्च कोटि का होता है। कुडली में चन्द्रमा अच्छी और बलवान स्थिति में हो तो ऐसा जातक बहुत ऊँचे पद पर आसीन होता है।

कर्क लग्न वाले के मन में यह इच्छा होती है कि उसके कई वाहन हो। लग्न में मंगल बैठा हो या फिर लग्न को देख रहा हो तो व्यक्ति की काया बलिष्ठ होती है। यह अति बुद्धिमान जलविहार का शौकीन होता है। कर्क लग्न का पुरुष जातक अपनी पत्नी से प्रेम करने वाला और उसकी बात का पालन करने वाला होता है।

देखा गया है कि इस लग्न में जन्में जातक की चाल सामान्य नई होती है। ग्रहों की गति के अनुसार कभी–कभी यह बहुत जल्दी–जल्दी हिरन की तरह और कभी–कभी हाथी की तरह मस्त चाल से चलने लगता है। कर्क लग्न वाले के दिमाग में हमेशा कुछ न कुछ चला ही करता है। यह एक ही समय पर कई बिंदुओं पर अपनी पकड़ बनाने में दक्ष होता है। यह व्यक्ति अगर किसी को एक बार मन से पकड़ ले या कोई लक्ष्य निर्धारित कर ले तो दुनिया की कोई ताकत छुडा नहीं सकती है। इनमें एक बात विशेष होती है यह एक चीज छोड़ने से पहले दूसरी चीज पर अपना लक्ष्य साध लेते है। ये अपने सेवकों व चहेतों की उन्नति में हमेशा तत्पर रहते हैं। यह जातक कुशल राजनीतिज्ञ होता है। यह अपनी विपरीत परिस्थिति व समय की नजाकत को देखते हुए नरम हो जाते हैं। कर्क लग्न वाले व्यक्ति का व्यक्तित्व बहुत खुला नहीं होता है। इसके दिमाग में क्या चल रहा है। इस बात का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इन लोगों का उद्देश्य सब को नहीं चल पाता है।

कर्क लग्न वाले के ध्येय की भनक उनके खास लोगों तक को नहीं हो पाती है। यह अपने शत्रुओं को कभी नहीं भूलता, शत्रुओं को अपने लक्ष्य पर ही रखता हैं इस लग्न के जातकों में एक सबसे खास बात होती है कि इनमें जानवरों के हाव–भाव को समझने तक की क्षमता हो सकती है। इन्हें पशु पक्षियों से विशेष प्रेम होता है। इस लग्न के व्यक्ति से हनुमान भी बहुत प्रसन्न रहते है और जीवन में यही बहुत इन लग्न वालों को देते है। मंगल इन लोगों के लिए परम कारक होता है। ❋❋❋

विशेषताऐं

1. कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान और प्रंबधकीय गुणों से पूर्ण होते है।

2. चर लग्न होने के कारण इन जातकों को घूमने में बहुत आनंद आता है।

3. जनसम्पर्क दूसरी लग्नो के मुकाबले काफी ज्यादा रहता है।

4. चन्द्रमा के कारण जीवन भर योजनाओं के बल पर उन्नति करता है।

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) की महत्ता

डा. कविता अगरवाल
ज्योतिषाचार्य, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ

असंक्रातिरमांतो यो मासश्चेत्सो अधिमासक:।
मलमासाह्यो श्रेय: प्रायश्चैदिसप्तसु।।
द्वात्रिंशद्धिर्गतैर्मासैर्दिनै:षोडशभिस्तथा।
धटिकानां चतुष्कोण पतत्याधिकमासक:।।

चंद्र मास और सौर मास दोनों का मेल बैठाने के लिए जिस किसी अमांत मास में रवि सक्रान्ति नहीं होती, उस मास को अधिक मास या मल मास कहा जाता है। चैत्र से अविश्व तक जो 7 मास होते है, उन्हीं में से कोई अधिक मास होता है। कभी–कभी फाल्गुन भी अधिक मास हो सकता है लेकिन पौष और माघ कभी अधिक मास नहीं हो सकते। सौर वर्ष में 365 दिन और 6 घण्टे 9 सैकण्ड होते है और चन्द्रवर्ष लगभग 354 दिन 9 घण्टे का होता है। इस अंतर को दूर करने के लिए तीसरे वर्ष अधिक मास की व्यवस्था है।

वास्तविक अधिक मास का निश्चय मूलतः दिनों या सूर्य के अंशो को ही गिनकर किया जाता हैं। कुछ ग्रंथो में एक सरलविधि दी गयी है, जिसके आधार पर पूर्वानुमान लगाया जा सकता है कि कौन से वर्ष में, किस मास में अधिक मास पड़ने की सम्भावना है। इसके लिये माधी अमावस्या व अंग्रेजी (सायन) तारीख देखी जाती है। यदि अमावस्या 14 से 24 तारीख के बीच पड़ती है, तो अगले वर्ष में अधिमास होता है। सन् 2011–2012 मे माधी अमावस्या 23 जनवरी पर पड़ी थी अतः अधिक मास 2012–2013। 18 अगस्त से भाद्र कृष्णपक्ष 16 सित. तक रहेगा। किस मास को अधिक मास माना जाएगा इसका भी विद्वानों ने निर्धारण किया है जब कभी कृष्ण पक्ष की पंचमी को सूर्य राशि बदलता है उसके अगले वर्ष में जिस मास में सूर्य पंचमी (कृष्ण पक्ष की) बदले उसके पहले का मास अधिक मास होगा।

पौराणिक कथा- एक बार सूतजी परमकल्याणकारी कथा ऋषियों को सुना रहे थे जोकि उन्होंने श्री व्यास जी महाराज के मुख से सुनी। एक समय श्री नारदजी भगवान नारायण की निवास स्थली जा पहुँचे। भगवान को प्रणाम कर वह प्रभु गुणगान करने लगे। और प्रभु से जनकल्याण व मोह से छुटने का उपाय पूछने लगे तब श्री हरि ने पुण्य कथा कहना प्रारम्भ किया। नारायण बोले–हे नारद! मैं तुम्हे भगवान पुरुषोत्तम का अत्यन्त अद्भुत महात्म्य सुनाता हूँ जिसके श्रवण करने से यश, कीर्ति पुत्र, एवं मोक्ष की प्राप्ति होती है। उन्होंने बताया कि पुरुषोत्तम नामक एक मास है जिसके स्वामी पुरुषोत्तम है। इनका व्रत करने से पुरुषोत्तम भगवान प्रसन्न होते है। नारदजी बोले मैने स्वामियों सहित चैत्रादि मासों में से माहात्मयों को तो सुना है, किंतु हे प्रभु! यह पुरुषोत्तम मास कभी सुना नहीं। सो कृपया मुझे यह बतलाइये कि पुरुषोत्तम क्या है? जिसके श्रवण पाठ और आचरण करने से रोग–शोक और दोष आदि में युक्त हुआ जा सके। नारायण ने कहा हे नारद! सुनो एक बार धर्मराज अजातशत्रु राजा युधिष्ठिर को दुष्ट दुर्योधन ने कपट करके जुए में हरा दिया और दुर्योधन के कहने पर दुःशासन ने द्रोपदी का अपमान किया तो भगवान श्रीकृष्ण ने उसकी रक्षा की। इसके उपरांत प्रतिज्ञानुसार पाडण्व राज्य त्यागकर वन को चले गये। वन में पाडवों ने बहुत कष्ट उठाये। उनको देखने के लिए भगवान श्रीकृष्ण वन पहुँचे तब पाँडव भगवान को देखकर प्रेम–विह्वल हो उठे और चरणों में प्रणाम किया भगवान दुखी हुऐ और तब भक्त वत्सल विश्वात्मा भगवान श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन आदि को भस्म कर डालने की इच्छा से कोप करने लगे। अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण के इस वीभत्स रुप को देखकर काँप उठे। युधिष्ठिर व द्रोपद ने विनती की तब भगवान श्रीकृष्ण ने अपने क्रोध का त्याग किया और तब पाडंवों ने भी संतोष माना और उनके भयभीत मुख फिर से खिल उठे। तब श्रीकृष्ण ने दो घड़ी ध्यान किया और पांडवों के हित के लिये इसप्रकार वचन बोले। श्रीकृष्ण ने कहा–हे राजन्! चैत्रादिक मास, टूटे हुए पक्ष, नाडिवाएँ, याम त्रियाम, ऋतु, मुहुर्त, अयन, उत्तरायन–दक्षिणायन, वर्ष, युग, परार्ध, अन्त और इनसे श्री परे नदी समुद्र झील, कुएँ, बाबड़ी, पल्लव, निर्झर, लता, वृक्ष, औषधि वृक्ष बांसवृक्ष वनस्पति पुर ग्राम, नगर पर्वत आदि सबके सब मूर्तिमान है और अपने–अपने गुणों के कारण पूज्य है। इन सबसे कोई नहीं जो अपूज्य और स्वामी रहित हो। हे पांडुपुत्र इनमें एक समय अधिक मास की भी उत्पत्ति हो गई सब लोकों में लोग उसे अनाथ, स्वामीहीन निन्दनीय, अपूज्य और मलमास, रवि संक्रान्ति

हीन आदि नाम से पुकारते थे शुभकार्यो के लिए इसे त्याज्य कहकर निंदा की गई ऐसे निंदा एवं अपमान के वचन सुनकर अधिक मास तेजहीन निरुधोगी दुखी हो गया फिर अत्यन्त चिंतित होकर मरणासन्न हो गया तब अन्त में वह मेरी शरण में आया और मुझे

शेष पेज 18 पर................

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

हरितालिका व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

हरितालिका व्रत भाद्रपद शुक्ल तृतीया तिथि में सम्पन्न करने का विधान है। प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व ही जागकर नित्य नैमित्तिक कर्मो को पूर्ण कर श्रद्धा व भाव पूर्ण होकर संकल्प लेना चाहिए कि आज मैं अमुक कामना सिद्धि के लिए इस व्रत का पालन करुँगी। वैसे तो सम्पूर्ण भारतवर्ष में इस व्रत का विधान है, परन्तु विशेष रुप से पूर्वी उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान बिहार और झारखण्ड आदि प्रान्तों में भाद्रपद शुक्ल तृतीया को सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने अखण्ड सौभाग्य की रक्षा के लिए बड़ी श्रद्धा, विश्वास और लगन के साथ हरितालिका व्रत (तीज)–का उत्सव मनाती है। जिस त्याग–तपस्या और निष्ठा के साथ स्त्रियाँ यह व्रत रखती हैं, वह बड़ा ही कठिन है। इसमें फलाहार–सेवन की बात तो दूर रही, निष्ठावाली स्त्रियाँ जल तक नहीं ग्रहण करतीं। व्रत के दूसरे दिन प्रातःकाल स्नान के पश्चात व्रतपरायण स्त्रियाँ सौभाग्य–द्रव्य एवं वायना छूकर ब्राह्मणों को देती हैं। इसके बाद ही जल आदि पीकर पारण करती हैं। इस व्रत में मुख्य रुप से शिव–पार्वती तथा गणेश जी का पूजन किया जाता है।

इस व्रत को सर्वप्रथम गिरिराजनन्दिनी उमा ने किया, जिसके फलस्वरुप उन्हें भगवान शिव पति रुप में प्राप्त हुए थे। इस व्रत के दिन स्त्रियाँ वह कथा भी सुनती हैं, जो पार्वती जी के जीव में घटित हुई थी। उसमें पार्वती के त्याग, संयम, धैर्य तथा एकनिष्ठ पातिव्रत–धर्म पर प्रकाश डाला गया है, जिससे सुनने वाली स्त्रियों का मनोबल ऊँचा उठता है।

कहते हैं, दक्षकन्या सती जब पिता के यज्ञ में अपने पति शिवजी का अपमान न सहन कर योगाग्नि में दग्ध हो गयीं, तब वे ही मैना और हिमवान् की तपस्या के फलस्वरुप उनकी पुत्री के रुप में पार्वती के नाम से पुनः प्रकट हुई। इस नूतन जन्म में भी उनकी पूर्व की स्मृति अक्षुण्ण बनी रही और वे नित्य–निरन्तर भगवान शिव के चरणारविन्दों के चिन्तन में संलग्न रहने लगीं। जब वे कुछ वयस्क हो गयीं तब मनोऽनुकूल वर की प्राप्ति के लिये पिता की आज्ञा से तपस्या करने लगीं। उन्होंने वर्षो तक निराहार रहकर बड़ी कठोर साधना की। जब उनकी तपस फलोन्मुख हुई, तब एक दिन देवर्षि नारद जी महाराज गिरिराज हिमवान् के यहाँ पधारे। हिमवान् ने अहोभाग्य माना और देवर्षि की बड़ी श्रद्धा के साथ सपर्या (पूजा) की।

कुशल–क्षेम के पश्चात नारदजी ने कहा–भगवान् विष्णु आपकी कन्या का वरण करना चाहते हैं, उन्होंने मेरे द्वारा यह संदेश कहलवाया है। इस सम्बन्ध में आपका जो विचार हो उससे मुझे अवगत करायें। नारदजी ने अपनी ओर से भी इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। हिमवान् राजी हो गये। उन्होंने स्वीकृति दे दी। देवर्षि नारद पार्वती क`पास जाकर बोले–उमे! छोड़ो यह कठोर तपस्या तुम्हें अपनी साधना का फल मिल गया। तुम्हारे पिता ने भगवान् विष्णु के साथ तुम्हारा विवाह पक्का कर दिया है।

इतना कहकर नारद जी चले गये। उनकी उनकी बात पर विचार करके पार्वती जी के मन में बड़ा कष्ट हुआ। वे मूर्च्छित होकर गिर पड़ीं। सखियों के उपचार से होश में आने पर उन्होंने उनसे अपना शिव विषयक अनुराग सूचित किया। सखियाँ बोली–तुम्हारे पिता तुम्हें लिवा जाने के लिये आते ही होंगे। जल्दी चलो, हम किसी दूसरे गहन वन में जाकर छिप जायँ। ऐसा ही हुआ। उस वन में एक पर्वतीय कन्दरा के भीतर पार्वती ने शिवलिंग बनाकर उपासनापूर्वक उसकी अर्चना आरम्भ की। उससे सदाशिव का आसन डोल गया। वे रीझकर पार्वती के समक्ष प्रकट हुए और उन्हें पत्नीरुप में वरण करने का वचन देकर अन्तर्धान हो गये। तत्पश्चात् अपनी पुत्री का अन्वेषण करते हुए हिमवान् भी वहाँ आ पहुँचे और सब बातें जानकर उन्होंने पार्वती का विवाह भगवान् शंकर के साथ ही कर दिया।

अन्ततः **'बरउँ संभु त रहउँ कुआरी।।'** पार्वती के इस अविचल अनुराग की विजय हुई देवी पार्वती ने भाद्र शुक्ल तृतीया हस्त नक्षत्र में आराधना की थी, इसीलिये इस तिथि को यह व्रत किया जाता है। तभी से भाद्रपद शुक्ल तीज को स्त्रियाँ अपने पति की दीर्घायु के लिये तथा कुमारी कन्याएँ अपने मनोवांछित वर की प्राप्ति के लिये हरितालिका (तीज)–का व्रत करती चली आ रही हैं।

'आलिभिर्हहिता यस्मात् तस्मात् सा हरितालिका' सखियों के द्वारा हरी गयी–इस व्युत्पत्ति के अनुसार व्रत का नाम हरितालिका हुआ। इस व्रत के अनुष्ठान से नारी को अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

अमावस्या तिथि व तिपरों की उत्पत्ति का कथन :- पूर्व समय की बात है प्रजापति ब्रह्माजी अनेक प्रकार की प्रजाओं का सृजन करे के विचार से मन को एकाग्र करके बैठे थे तब उनके मन से तन्मात्राएँ (पचज्ञानेन्द्रियों के विषय शब्द–स्पर्शादि ही तन्मात्राएँ हैं। बाहर निकलीं। उन्होंने उन सबको प्रधानता दी और सोचने लगे कि इनको वे किन रुपों में सुशोभित करें। कारण, वे सभी ब्रह्माजी के शरीर में पहले से ही थीं और वहीं से पुनः ये धूम्रवर्ण वाली तन्मात्राएँ प्रकट हुई थीं। फिर वे चमककर देवताओं से कहने लगीं–'हम सोमरस पीना चाहते हैं।' साथ ही उनके मन में ऊपर के लोक में जाने की इच्छा हुई। उन सबों ने सोचा–'हम आकाश में आसन जमाकर वहीं तपस्या करें।' ऊपर जाने के लिये वे मुख उठाकर तिरछे मार्ग का अवलम्बन करना ही चाहती थी, इतने में उन्हें देखकर ब्रह्माजी ने कहा–'समस्त गृहाश्रमियों का कल्याण करने के लिये आप लोग पितर होकर रहें।' ये जो ऊपर मुख करके जाना चाहते हैं, इनका नाम 'नान्दीमुख' होगा। इस प्रकार कहकर ब्रह्माजी ने उनके मार्ग की भी निरुपण कर दिया। उस समय ब्रह्माजी ने उन पितरों के लिये मार्ग सूर्य का दक्षिणायनकाल बता दिया। इस प्रकार प्रजा की सृष्टि कर वे जब मौन हो गये, तब पितरों ने उनसे कहा–'भगवन्! हमें जीविका देने की कृपा कीजिये, जिससे सुख प्राप्त कर सकें।'

इस पर ब्रह्माजी ने कहा–तुम्हारे लिये अमावस्या की तिथि ही दिन हो। उस तिथि में मनुष्य जल, तिल और कुश से तुम्हारा तर्पण करेंगे। इससे तुम परम तृप्त हो जाओगे। इसमें कुछ भी संदेह नहीं है। उस अमावस्या तिथि में तिल देने का विधान है। पितरों के प्रति श्रद्धा रखने वाला जो पुरुष तुम्हारी उपासना करेगा, उस पर अत्यन्त, संतुष्ट होकर यथाशीघ्र वर देना तुम्हारा परम कर्तव्य है। ❋❋❋

अर्पण और तर्पण का पर्व पितृपक्ष

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

श्राद्ध पितरों के नाम पर किये जाते है और उनमें दान पुण्य किया जाता है। इस निमित्त उनके साथ तर्पण पिण्डदान आदि कर्मकाण्ड भी जोड़ दिये गये हैं। जिस वर्ष तिथि में पितरों की मृत्यु हुई हो, उस दिन श्राद्ध किये जाते है और आश्विन कृष्ण पक्ष में भी। चूंकि उन दिनों कन्या का सूर्य होता है। पूर्वजों या गुरुजनों द्वारा किये गये उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना और उसके वार्षिक ब्याज को चुकाना वार्षिक श्राद्ध है, चाहे वह मरण वाली तिथि को किया जाये या आश्विन पक्ष में।

उपकारी का प्रत्युपकार करना सामान्य मनुष्य धर्म है। धर्म–कर्तव्यों के प्रति श्रद्धा बनाये रखना ही श्राद्ध है। अन्त्येष्टि संस्कार के उपरांत जो 13 दिन बाद श्राद्ध किया जाता है, उसमें स्वावलंबी उत्तराधिकारी पूर्वजों की छोड़ी सप्पत्ति को उनकी धरोहर मानकर उनकी सद्गति के लिये ही परमार्थ प्रयोजनों में लगा देते है। मात्र असमर्थ आश्रित ही उसे निर्वाह काम में लाते हैं।

दान का परिणाम लोक और परलोक दोनों में ही होता है। उससे यश और शांति दोनों ही मिलते है। इस तरह दान–पुण्य अथवा वितरण क्रम अपनाने से समाज की सुव्यवस्था भी बनी रहती है। पर वह दान सत्पात्रों को ही दिया जाना चाहिए और ऐसा होना चाहिए जिससे किसी की सुविधा संपन्नता भले ही न बढ़े, पर उनसे पिछडेपन से छुटकारा पाने और आगे बढ़ने उठने में सहारा मिले। यश के लिए किसी पर भी नैसा लुटा देना एक प्रकार का अहंकारी अज्ञान है।महाभारत की कथा है कि राजा कर्ण नित्य सवा मन सोने का दान किया करते थे। जब वे स्वर्गलोक गये तब उनके लिए निवास, वस्त्र उपकरण, आहार आदि सब कुछ सोने से ही विनिर्मित मिला।यह देखकर वे चकित भी हुए और दुखी भी। केवल स्वर्ण साधनों से ही मेरा क्या काम चलेगा? देवदूतों ने कहा–जो आपने दिया है, वही तो आपको मिलेगा।कर्ण को अपनी भूल प्रतीत हुई। उन्होंनं धरती पर एक महीने के लिए लौटने की इच्छा प्रकट की। धर्मराज ने वह अनुरोध स्वीकार कर लिया। वापस आते ही उन्होंने ज्ञानदान और अन्न दान के लिए अधिकारी पात्र तलाश किये और खूब दान किया। फिर वे स्वर्ग गये तो जीवनोपयोगी सभी सामग्री उन्हें उपलब्ध हुई।

आत्मिक प्रगति के लिए सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है–'श्रद्धा।' में शक्ति भी है। वह पत्थर को देवता बना देती है और मनुष्य को नर नारायण स्तर तक उठा ले जाती है। किन्तु श्रद्धा मात्र चिंतन या कल्पना का नाम नहीं है। उसका प्रत्यक्ष प्रमाण भी होना चाहिए। यह उदारता, सेवा, सहायता, करुणा आदि के रुप में ही हो सकती है। उन्हें चिन्तन तक सीमित न रखकर कार्य रुप में, परमार्थ परक कार्यो से ही परिणत करना होता है। यही सच्चे अर्थो मे श्राद्ध है। उपकारी के प्रति कृतज्ञता का व प्रत्युपकार का भाव रखना, भावना क्षेत्र की पवित्रता एवं उत्कृष्टता का प्राणवान चिन्ह है। इसके लिए धनदान आवश्यक नहीं, समय, धन, श्रमदान, भाव दान भी असमर्थता की स्थिति में इसी प्रयोजन की पूर्ति करते हैं। उन्हीं सब बातों पर विचार करते हुए भारतीय धर्म न मिलने या अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने की स्थिति में इसे जलांजलि देकर तर्पण के रुप में भी संपन्न किया जा सकता है। यह सोचना उचित नहीं कि जो मर गए उन तक हमारी दी हुई वस्तु कैसे पहुँचेगी। पहुँचती तो केवल श्रद्धा है। उसे चरितार्थ करने के लिए दिया गया दान तो सत्प्रवृत्तियों के संबंधन में ही काम आता है।

श्राद्ध कितने प्रकार के होते हैं? क्या आप जानते हैं श्राद्ध कितने प्रकार के होते हैं? शायद नहीं! श्राद्ध बारह प्रकार के होते है और भिन्न–भिन्न कार्यो के निमित्त सम्पन्न किये जो हैं। आईये जानते है इन बारह श्राद्धों के बारे में–

1. **नित्य श्राद्ध–** जो श्राद्ध प्रतिदिन किया जाये, वह नित्य श्राद्ध है। तिल, धान्य, जल, दूध, फल, मूल, शाक आदि से पितरों की संतुष्टि के बारे में।

2. **नैमित्तिक श्राद्ध–** नैमित्तिक श्राद्ध को एकोदृष्टि श्राद्ध के नाम से भी इसे जाना जाता है। इसे विधिपूर्वक सम्पन्न कर विषम संख्या 1, 3, 5 में ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये।

3. **काम्य श्राद्ध–** जो श्राद्ध कामना युक्त होता है, उसे काम्य श्राद्ध कहते हैं।

4. **वृद्धि श्राद्ध–** इस श्राद्ध को धन–धान्य की प्राप्ति एवं वंश वृद्धि के लिये किया जाता है। इसे उपनयन संस्कार सम्पन्न व्यक्ति को ही करना चाहिये।

5. **सपिण्डन श्राद्ध–** इस श्राद्ध को सम्पन्न करने के लिये चार शुद्ध पात्र लेकर उनमें गन्ध, जल और तिल मिलाकर रखा जाता है, फिर प्रेत पात्र का जल पितृ पात्र में छोड़ा जाता है। चारों पात्र प्रतीक होते है–प्रेतात्मा, पितात्मा, देवात्मा और उन अज्ञात आत्माओं के, जिनके बारे में हमें ज्ञान नहीं है।

6. **पार्वण श्राद्ध–** अमावस्या अथवा किसी पर्व विशेष पर किया गया श्राद्ध पार्वण श्राद्ध कहा जाता है।

7. **गोष्ठ श्राद्ध–** गौओं के लिये किया जाने वाला श्राद्ध कर्म गोष्ठ श्राद्ध कहलाता है।

8. **शुद्धयर्थ श्राद्ध–** विद्वानों की संतुष्टि, पितरों की तृप्ति, सुख–सम्पत्ति की प्राप्ति के निमित्त ब्राह्मणों द्वारा कराया जाने वाला कर्म शुद्धयर्थ श्राद्ध है।

9. **कर्मांग श्राद्ध–** यह श्राद्ध कर्म गर्भाधान, सीमान्तोन्नयन तथा पुंसवन संस्कार के समय सम्पन्न होता है।

10. **दैविक श्राद्ध–** दैविक श्राद्ध वह होता है जिसमे देवताओं

शेष पेज 19 पर...............

आखिर क्यों ढका जाता है सिर, पूजा करते समय

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) 326023

पौराणिक कथाओं में नायक, उपनायक तथा खलनायक भी सिर को ढकने के लिए मुकुट पहनते थे। यही कारण है कि हमारी परंपरा में सिर को ढकना स्त्री और पुरूषों सबके लिए आवश्यक किया गया था। सभी धर्मों की स्त्रियां दुपटा या साड़ी के पल्लू से अपना सिर ढंककर रखती थी। इसीलिए मंदिर या किसी अन्य धार्मिक स्थल पर जाते समय सिर ढकना जरूरी माना गया था। पहले सभी लोगों के सिर ढकने का वैज्ञानिक कारण था। दरअसल विज्ञान के अनुसार सिर मनुष्य के अंगो में सबसे संवेदनशील स्थान होता है। ब्रहमरध्रं के भाग से शरीर के अन्य अंगों पर आते है।

आपको बता दें कि हमारी परंपरा में सिर को ढकना स्त्री और पुरूषों सबके लिए आवश्यक किया गया था।

सभी धर्मो की स्त्रियां दुपटा या साड़ी के पल्लू से अपना सिर ढंककर रखती थी। इसीलिए मंदिर या किसी अन्य धार्मिक स्थल पर जाते समय या पूजा करते समय सिर ढकना जरूरी माना गया था। लेकिन सिर ढकने का एक वैज्ञानिक कारण भी है। दरअसल सिर मनुष्य के अंगो में सबसे संवेदनशील भाग होता है। ब्रहमरंध्र

सिर के बीचों–बीच स्थित होता है। मौसम के मामूली से परिवर्तन के दुष्प्रभाव ब्रहमरंध्र के भाग से शरीर के अन्य अंगों पर आते हैं। इसीलिए सिर को ढक लिया जाता है। इसके अलावा आकाशीय विद्युतीय तरंगे खुले सिर वाले व्यक्तियों के भीतर प्रवेश कर

क्रोध, सिरदर्द, आखो में कमजोरी आदि रोगों को जन्म देती है। इसीलिए इन सब से बचने के लिए औरतें और पुरुष अपना सिर ढक लेते हैं। दरअसल विज्ञान के अनुसार सिर मनुष्य के अंगों में सबसे संवेदनशील स्थान होता है। ब्रहमरंध्र सिर के बीचो–बीच स्थित होता है। मौसम के मामूली परिवर्तन के दुष्प्रभाव ब्रहमरंध्र के भाग से शरीर के अन्य अंगो पर आतें हैं।

इसी कारण सिर और बालों को ढककर रखना हमारी परंपरा में शामिल था। इसके बाद धीरे–धीरे समाज की यह परंपरा बड़े लोगों को या भगवान को सम्मान देने का तरीका बन गई। साथ ही इसका एक कारण यह भी है कि सिर के मध्य में सहस्त्रासार चक्र होता है। पूजा के समय इसे ढक्कर रखने से मन एकाग्र बना रहता है। इसीलिए नग्र सिर भगवान के समक्ष जाना ठीक नहीं माना जाता है। यह मान्यता है कि जिसका हम सम्मान करते है या जो हमारे द्वारा सम्मान दिए जाने योग्य है। उनके सामने हमेशा सिर ढक्कर रखना चाहिए। इसीलिए पूजा के समय सिर पर और कुछ नहीं तो कम से कम रूमाल ढक लेना चाहिए। इससे मन में भगवान के प्रति जो सम्मान और समर्पण है उसकी अभिव्यक्ति होती है। ❋❋❋

मौत के बाद सपनों में अपने

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, वास्तु शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर,

जब किसी परिचित रिश्तेदार की मौत हो जाती है, तो कई बार सपनों में वे दिखाई देते हैं। मृत रिश्तेदार सपनों में बाते करते हैं। प्यार जताते हैं। सलाह देते हैं। चेतावनी देते हैं। और जागते ही गायब हो जाते हैं। आइये देखें, सपनों में क्या कहते हैं अपने–

लोक मान्यता–सपनों में गुजरे हुए अपनों को देखना एक किस्म की चेतावनी है ऐसा माना जाता है कि वे मोहवश व्यक्ति विशेष को अच्छे–खराब समय का आभास कराते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्वप्न में मृत व्यक्ति का स्वरुप कैसा है। यदि देव स्वरुप है, तो शुभ संकेत, मानव–स्वरुप है तो सतर्क रहने की चेतावनी और प्रेत–स्वरुप है तो इसे शुभ संकेत माना जाता है। सपनों में मृत रिश्तेदार जो भावनायें व्यक्त करते हैं, उन्हें समझा जा सके तो भविष्य के घटनाक्रम का आभास हो सकता हैं। ऐसा भी माना जाता हैं कि अपने अगले जन्म में प्रवेश से पहले ये रिश्तेदार अपनों से अंतिम मुलाकात के लिए आतें है। खासतौर पर तब, जब एक ही मृत व्यक्ति को अनेक लोग एक साथ अपने–अपने सपनें में देखते हैं।

चीनी व्याख्या–मृत माता–पिता को स्वप्न में देखना परेशानी से भरे समय की ओर इशारा है। यह आस–पास के लोगों से सतर्क रहने की सलाह भी हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि–हर व्यक्ति हर वक्त याद नहीं आता, लेकिन जब याद आता हैं। तो दिल की गहराई तक इसका अहसास होता है। यह अहसास ही सपनों में मृत रिश्तेदारों से मुलाकात करवाता है। व्यक्ति के स्मृति पटल पर अंकित स्वरुप ही सपनों में मृतक की आकृति को दर्शाता है, इसलिए कई बार मृत व्यक्ति की पहचान वही होती है लेकिन रंग–रुप अलग। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि–मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

त्वचा की प्रकृति और आपका व्यक्तित्व

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति के अनुसार मानव की त्वचा का रंग मूलतः तीन प्रकार का हैं पश्चिम के ठंडे देशों में त्वचा का रंग ललाई के साथ गोरा होता है। भारत जैसे पूर्वी देशों में यह गौरवर्प, लेकिन इसमें ललाई नहीं होती है। दक्षिणी गर्म क्षेत्रों के लोग साँवले या गहरे काले होते है। ज्योतिषीय आँकलनों में हमें इन भौगोलिक प्रभावों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

ज्योतिषीय दृष्टि से मनुष्य की त्वचा को सूक्ष्म और स्थूल जैसी दो श्रेणियों में विभक्त किया जा सकता है। इनमें कुछ क्लिष्ट श्रेणियां भी है जिनके सम्बन्ध में उत्तरोत्तर अभ्यास करने स्वतः ही जानकारी प्राप्त होती है। मैं यहाँ सूक्ष्म और स्थूल दो तरह की श्रेणियों के संबंध में बताना ही समीचीन मानता हूँ। इनके संबंध में जानकारी कर लेने भर से ही पाठक त्वचा से जुड़े मूलभूत सिद्धातों को समझ सकेंगे।

सूक्ष्म त्वचा :– आम बोल–चाल की भाषा में इसे पतली त्वचा भी कहा जाता है। हाथ से छूने या चिकोटि काटने के तरीके से पकड़ने पर यह रेशमी कपड़े की तरह लगती है। त्वचा की श्रेणी की पहचान के लिए उसे हथेली के पिछले भाग से देखना चाहिए। यदि त्वचा पतली या सूक्षम होगी, तो उस पर बहुत बारीक रेखाओं का जाल होगा। इसमें कसाव नहीं होगा। कुछ दिनो के लगातार अनुभव के बाद सूक्ष्म और स्थूल त्वचा में अंतर का पता आसानी से लग सकता है। सूक्ष्म त्वचा रखने वालों में जहाँ विशेषताएं होती है वहीं कुछ कमजोरियाँ भी इनके मस्तिष्क में घर बना लेती है। ये बहुत ही उर्वर मस्तिष्क के धनी होते हैं। लेकिन इनमें व्यवहारिकता का अभाव होता है। ये बहुत अच्छे योजनाकार होते हैं, लेकिन योजनाओं का क्रियान्वयन कर पाना इनके लिए आसान नहीं है छोटी–छोटी बाते इनके दिलो–दिमाग पर प्रभाव डालती है। पल में सुखी होना और पल में दुखी होना इनके स्वभाव की प्रकृति में होता है।

त्वचा के साथ इनकी बुद्धि भी पैनी हो जाती है। ये हमेशा कुछ नया करने की चेष्टा में रहते है। बहुत ही सुंदर योजना बनाते हैं, लेकिन उसे धरातल पर उतारते समय कुछ बुनियादी भूले कर जाते हैं। यह इस तथ्य का द्योतक है कि इनमें उस क्षमता का प्रायः अभाव होता है जो व्यक्ति को समाज में एक अच्छा स्थान दिला सके। सूक्ष्म त्वचा के साथ यदि विशाल मस्तक हो, तो जातक अपने क्षेत्र में सफल रहता है। यह भी एक अनुभव सिद्ध तथ्य है कि कला, साहित्य राजनीति, समाज सेवा और शिक्षण जैसे क्षेत्रों के उच्चस्थ पदों पर सूक्ष्म त्वचा वाले लोग ही बैठते हैं। इनका स्वभाव बहुत ही मृदु होता है। इसका लाभ इनको अपने कार्य क्षेत्र में प्राप्त होता है। जिस किसी की त्वचा सूक्ष्म होगी वह कभी भी श्रमिक नहीं होगा और न ही किसी के अधीन रह कर कार्य करेगा।

स्थूल व मोटी त्वचा :– सूक्ष्म त्वचा वाले समाज का मार्ग दर्शन करते हैं और स्थूल या मोटी त्वचा वाले इनकी सामाजिक मान्यताओं का अक्षर पालन करते हुए इनके अनुगामी होते हैं।

समूचा श्रमिक वर्ग मोटी त्वचा वाला होता है। मेहनत इनके जीवन का धेय होता है। ये हमेशा यर्थाथ में जीते हैं ये जिस काम को ठान लेते हैं उसे पूरा करते हैं ये कभी–भी लंबी योजनाएं नहीं बनायेंगे। अक्सर यह देखा जाता है कि ये किसी पूर्व योजना के कार्य आरंभ करते हैं लेकिन कार्य के प्रति इनकी निष्ठा होती है और अंततः उसमें सफलता प्राप्त कर ही लेते हैं। मैंने लिखा है कि स्थूल त्वचा के लोग श्रमिक वर्ग के होते है। श्रमिक वर्ग से मेरा जो आशय है, पाठक उसे समझे। श्रमिक का शाब्दिक अर्थ है श्रम करने वाला। मैंने यह कहीं नहीं लिखा है कि मिट्टी खोदने वाला, खेत खलियानों में कार्य करने वाला या फिर उद्योगों में माल ढोने वाला ही श्रमिक से मेरा आशय इसके शाब्दिक अर्थ से है अर्थात श्रम करने वाला। जिस किसी व्यक्ति की त्वचा स्थूल होगी, वह हमेशा मेहनत करेगा। इसका कार्य क्षेत्र मिट्टी खोदने वाले से लेकर सरकार में उच्चस्थ पदों को सुशोभित करने वाले या फिर औद्योगिक या व्यवसायिक संस्थानों के मालिक होना भी हो सकता है।

पाठकों की सुविधा के लिए बता दूं कि मोटी त्वचा वालों का मूल मंत्र श्रम होता है। फिर वे चाहे किसी भी क्षेत्र या पद पर हो। उदाहरण के लिए मेरे एक परिचित शिक्षा के क्षेत्र में उच्च पद पर हैं। इनका जन्म एक ग्रामीण क्षेत्र में हुआ जिसकी आबादी एक हजार के लगभग थी, लिहाजा बुनियादी सुविधाओं का अभाव होना अवश्य भावी है। परिवार की आर्थिक स्थिति भी बदतर थी उन्होंने हार नहीं मानी और स्वयं पढ़ने के साथ अपने से जूनियर को पढ़ाने का कार्य भी करने लगे। सच मानिए कि इन्होंने इतनी मेहनत की कि ये मेहनत के पर्याय बन गए। आज ये बहुत ही सम्मान जनक पद पर हैं। मैं जब इनसे मिला तो मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ इनकी मोटी त्वचा ने इनको इतनी जिजीविषा प्रदान की कि ये इतना श्रम कर पाये। अगर इनकी त्वचा सूक्ष्म होती, तो ये अवश्य ही समृद्धि कोई शार्टकट खोजते। सूक्ष्म त्वचा वाले इतने लंबे रास्ते को कभी नहीं चुनते हैं।

मस्तिष्क की क्षमता और आपकी त्वचा :– त्वचा को देखकर मस्तिष्क की क्षमता का पता लगाया जाना संभव है। इसके लिए थोड़े अभ्यास की आवश्यकता है। हमें उस त्वचा की पहचान की आवश्यकता है जो सूक्ष्म और स्थूल दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। देखे कैसे? आपने पढ़ा कि सूक्ष्म त्वचा वाले अच्छे योजनाकार होते हैं। स्थूल त्वचा वाले परिश्रमी होते हैं। सीधी सी बात है कि हम अच्छा मस्तिष्क उसे मानते हैं जो न केवल अच्छी योजनाएं बना सके, बल्कि उसको व्यवहार में भी सुव्यवस्थित ढंग से क्रियान्वयन कर सके।

त्वचा पर शुभाशुभ चिंह :– तिल और दूसरे धब्बे मूलतः त्वचा की सुन्दरता के लिए अच्छे नहीं माने जाते हैं। विज्ञान की भाषा में इनको पिगमेटेड नेवी या मेलानोसाइटिक कहा जाता है। आमतौर पर इनको रोगों की श्रेणी में रखा जाता है। आधुनिक युग में इनको नष्ट

शेष पेज 19 पर...............

वास्तु ऋषि
9219413439, 9837755255
E-mail.vastumandiram@rediffmail.com

शनि की महिमा-पहले जाने फिर माने

डॉ. श्रीमती रेखा जैन 'आस्था'
ज्योतिष प्रभाकर वास्तु शास्त्राचार्य

वर्तमान समय मशीनों का युग है। और मशीन का अस्तित्व शनि से है। इसी लिए वर्तमान समय में हर तरफ शनि महाराज की ही महिमा सुनाई पड़ती है। शनि देव के मन्दिरों में जितनी भक्तों की कतार मिलती है। शायद ही इतनी लम्बी कतार किसी और मन्दिर में मिलें।

शनि को शनैश्चराय सौराय कृष्णाय आदि अनेकों नामों से जाना जाता है। इसे अंग्रेजी में सैटर्न, फारसी में केवान, अरबी में जुहल कहते है। शनि का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को हुआ इनके पिता सूर्य तथा माता का नाम छाया है। यमराज इनके छोटे भाई तथा यमुना इनकी बहन है। शनि का आधिपत्य मकर, कुम्भ राशि पर तथा पुष्य, अनुराधा और उत्तराभाद्रपद नक्षत्रों पर है। शनि का रंग काला है नेत्र सुन्दर है आकृति दीर्घ है, तथा पैर से विकलांग है। शनि की प्रकृति बात व कफ है। शनि सदैव काले वस्त्र ही धारण करते है। यह वृद्ध, तमोगुणी, स्थिर तथा शीतल है। पश्चिम दिशा का स्वामी है। शूद्र तथा श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधी है। यह शमशान तथा शराब खाने में क्रीड़ा करता है तथा रात्रि वली है। इसका वार शनिवार है। सवारी गिद्ध है। रस कसैला तथा धातु लोहा है। यह नैसर्गिक रुप से पापी ग्रह है। इसे कुण्डली में 6, 8, 10, 12 भावों का कारकत्व प्राप्त है। यह अपने बैठे स्थान से तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर दृष्टिपात करता है। यह तुला राशि में 20 अंश तक उच्च तथा मेश राशिमें 20 अंश तक नीच का रहता है। इसकी राशि पृष्ठोदयी तथा निवास उसर भूमि है।

भगवान शिव की आराधना करने पर शनि को दण्डनायक ग्रह घोषित करके न्यायाधीश की पदवी दी गयी और नवग्रहों में स्थान प्रदान किया गया। शनि मनुष्य, देव, पशु, पक्षी, राजा, रंक आदि सभी को कर्मानुसार मिलने वाले दण्ड को निर्धारण कर निर्णय देता है। शनि एक न्याय प्रिय ग्रह है।

सौर मण्डल में सबसे सुन्दर ग्रह शनि है। यह गुरु के बाद स्थित है। यह पृथ्वी से एक तारे के समान दिखायी देता है। इसका पूर्वी पश्चिमी व्यास की अपेक्षा दक्षिणोत्तर व्यास लगभग 12000 किमी. कम है। यह गोल न होकर चपटा हैं इसका व्यास लगभग 120000 से भी ज्यादा है। जो पृथ्वी के व्यास से 9 गुना अधिक है। यह सूर्य से 140 करोड़ 80 लाख किमी. की दूरी पर स्थित है। इतनी दूरी के कारण ही सूर्य का प्रकाश बहुत कम ही शनि पर पहुँचता है। इसी कारण सामान्यतया शनि पर अंधेरा ही रहता है। शनि धूल के कणों तथा गैस के बादलों से भरा रहता है। वायु का प्रवाह भी अधिक है। जो प्राणियों के लिए अनुकूल नहीं है। शनि का एक दिन पृथ्वी के एक सौर मास के बराबर होता है। और पृथ्वी के ढाई वर्ष के बराबर एक सौर मास होता है। इस दौरान शनि कई बार वक्री तथा मार्गी होता है।

शनि के चारों ओर नील, वलय, कंकड़ नाम के तीन वलय है। जो अलग रहते हुए भी शनि के साथ घुमते है। जिससे इसकी सुन्दरता और भी बढ़ जाती है। शनि की महिमा अपरंपार है। हस्त रेखा शास्त्र में मध्यमा उंगली के नीचे गुरु एवं सूर्य पर्वत के बीच में स्थित रहता है। तथा अंकशास्त्र में प्रत्येक माह की 8, 17, 26 तिथियों का स्वामी है। हर जातक के जीवन में 3 बार शनि की साढ़ेसाती आती है और प्रभावित भी करती है।

शनि के प्रभाव को कम करने के उपाय–

1. शनि देव पर तेल का अभिषेक करें।
2. पीपल के वृक्ष पर सूर्यास्त के उपरान्त तेल का दीपक जलायें।
3. वृद्धों, विकलांग व अन्धों की सेवा करें।
4. काली वस्तु का दान करें।
5. शनि अष्टक, हनुमान चालीसा या सुन्दर कांड का पाठ करें।
6. चीटियों को भोजन कराएं।

उपरोक्त उपायों से शनि देव अवश्य प्रसन्न हो जायेंगे और आप पर कृपा बनायें रखेंगे।

❋❋❋

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

मासिक राशिफल

16 अगस्त - 15 सितम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस माह में अर्थ हानि होने का भय रहेगा। इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आय से व्यय अधिक होगें। शत्रु पक्ष प्रबल होगा। सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। नेत्र रोग भी सभंव हैं।

वृष (TAURES)- इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। कारोबार से लाभ होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव से ग्रस्त रहेगें। नई योजनाओं से लाभ होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– धन हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा। क्रोध में वृद्धि होगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। इस माह में क्रोध में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। पत्नि से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में धन लाभ होने की संभावना रहेगी। मित्रों से मेल बढ़ेगा। पत्नि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। मास के अन्त में हानि होने की संभावना रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस माह में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। चोर से बचें। सन्तान हेतु विशेष खर्च होगा। कारोबार ठीक चलेगा। प्रियजनों को कष्ट होने की संभावना रहेगी। इस मास में शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– कारोबार में लाभ हाने की स्थिति बनेगी। इस माह में वायु रोग होने की संभावना रहेगी। नेत्र रोग से ग्रस्त रहने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में हानि होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। भाइयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आय से ज्यादा व्यय करेंगे। मानसिक तनाव से बचें।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य खराब होने का भय रहेगा। भाईयों को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। पत्नि से शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस माह में हानि होने का भय लगा रहने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानिया खत्म नहीं होगी। विवादों से दूर रहें। शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। नई योजनाओ से हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजनाओं से लाभ की प्राप्ति होगी।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- पत्नि सुख से लाभ होगा। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कार्य मे निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रु से परेशानी होने की संभावना रहेगीं। स्थान परिवर्तन का विचार बनेगा। घरेलू परेशानिया लगी रहेगी। कारोबार ठीक चलेगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अगस्त	सितम्बर
17 अमावस्या व्रत (पोला त्योहार) **20** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, (अधिक मास) **25** दुर्गाष्टमी (अ.मास) **27** एका. व्रत (अ. मास) **29** प्रदोष व्रत (अ.मास) **31** पूर्णिमा (अ. मास)	**4** श्री गणेश चतुर्थी व्रत (अ.मास) **5** शिक्षक दिवस **8** स्वामी शिवानंद जं., कालाष्टमी (अ.मास) **9** पं. गोविन्द बल्लभ पंत जं. **11** श्री बिनोबा भावे जं. **12** एकादशी व्रत (अ.मास) **13** प्रदोष व्रत, (अ.मास) **14** भारतीय हिन्दी दिवस **15** भ. इन्जीनियर्स डे, अमावस्या व्रत (अ.मास)

ग्रहारम्भ मुहूर्त
अगस्त–नही है।
सितम्बर– नही है।

गृह प्रवेश मुहूत
अगस्त– नही है।
सितम्बर–नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
अगस्त–19, 20, 25, 28, 29
सितम्बर–नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
अगस्त–20, 29 सितम्बर– 12

सर्वार्थ सिद्ध योग

अगस्त	सितम्बर
22 ता. 14:19 से सू.उ. तक 31 ता. 6:21 से सू.उ. तक	09 ता. सू.उ. से 24:23 तक

मासिक राशिफल

16 सितम्बर - 15 अक्टूबर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ- इस माह में वायु विकार होने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। गुप्त शत्रु से बचें।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में लाभ की प्राप्ति होगी। यात्रा में कष्ट से बचें।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– निजीजन से अनबन होने की संभावना रहेगी। इस माह में प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। धन लाभ होकर हानि होने का भय रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। घरेलू परेशानी लगी रहेंगी। व्यवसाय मध यम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। कारोबार में रुकावटें आयेंगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। शत्रु का भय रहेगा। मास के अन्त तक खर्चा अधिक होगा। नेत्र रोग का भय रहेगा।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास से स्वास्थ्य श्रेष्ठ रहेगा। अर्थ लाभ होकर भी हानि का भय रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार में हानि होने की संभावना रहेगी। शत्रु कमजोर रहेंगे।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में स्वास्थ्य उत्तम होने की संभावना रहेगी। आर्थिक परेशानियों लगी रहेंगी। खर्चे अधिक होंगे। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। यात्रा का सुख मिलेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। कार्य से निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। व्यवसाय ठीक रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। नई योजनायें बनायेंगे। सन्तानपक्ष अच्छा रहेगा।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस माह में स्थान परिर्वतन होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होकर भी हानि भय लगा रहेगा शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। कारोबार में रुकावटें आने की संभावना रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– जमीन-जायदाद संबंधी परेशानी कम होंगी। मास के अन्त में शुभ रहेगा। इस माह में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। धन लाभ होने की संभावना रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- इस माह में उदर विकार संबंधित रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। निजीजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची - इस माह में स्वास्थ्य खराब रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मास के अन्त में कुछ परेशानियां उत्पन्न होगी। कारोबार ठीक रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

सितम्बर	अक्टूबर
17 विश्वकर्मा पूजन **18** गौरी (हरतालिका तीज व्रत) तृतीया **19** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **20**ऋषि पंचमी **21** सूर्य षष्ठी **23** राधाष्टमी **24** हरि जं.**26** जलझूलनी एका व्रत, वामन द्वादशी **27** प्रदोष व्रत, विश्व पर्यटक दिवस **29** अनन्त चतुर्दशी, शिरडी वाले साई बाबा जं. **30** पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी	**1** प्रतिपदा श्राद्ध **2** महात्मागांधी जं., लाल बहादुर शास्त्री जं., द्वितीय श्राद्ध **3** तृतीया श्राद्ध, **4** चतुर्थी श्राद्ध **5** पंचमी श्राद्ध, **6** षष्ठी श्राद्ध **7** सप्तमी श्राद्ध **8** भारतीय वायु सेना दिवस, अष्टमी श्राद्ध **9** नवमी श्राद्ध, **10** दशमी श्राद्ध **11** एकादशी श्राद्ध, **12** द्वादशी श्राद्ध **13** प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध **14** चतुर्दशी श्राद्ध **15** अमावस्या श्राद्ध, सोमवती अमावस्या

ग्रहारम्भ मुहूर्त
सितम्बर–नही है।
अक्टूबर – नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त
सितम्बर–नही है।
अक्टूबर–नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त
सितम्बर–17, 23
अक्टूबर– नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त
सितम्बर– 16, 17, 26
अक्टूबर–10, 15

सर्वार्थ सिद्ध योग

सितम्बर	अक्टूबर
16 ता. सू.उ. से 15:51 तक	07 ता. सू.उ. से 30:01 तक
19 ता. सू.उ. से 24:00 तक	13 ता. सू.उ. से 21:59 तक
28 ता. सू.उ. से 13:36 तक	

स्वास्थ्य हेतु आहार की भूमिका

शैली शर्मा
छात्रा

हमारे जीवन में आहार का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। लेकिन आज हमारी भागदौड़ भरी जिन्दगी में हमारे आहार की सीमाएं सिर्फ खाने तक ही रह गई है और हमारे खाने का उद्देश्य सिर्फ भूख मिटाना और स्वादिष्ट खाना ही रह गया है। जिस तरह से टेक्नोलॉजी हमारे जीवन पर हावी हो रही है उसी तरह से पाश्चात्य भोजन भी हमारे (भारतीय) आहार पर हावी हो रहा है।

क्या सच में हमने कभी ये सोचा है कि इस पाश्चात्य भोजन से हमारे शरीर को क्या कुछ मिलता है? शायद नहीं। क्योंकि अगर हम ऐसा सोच पाते तो शायद हम पाश्चात्य भोजन के दुष्प्रभावों से खुद को बचा पाते। वास्तव में पाश्चात्य भोजन भोजन हमें केवल शक्ति और मोटापा ही देता है। अगर हम विजान की भाषा में कहें तो यह केवल Fat (चर्बी) और Enegy (ऊर्जा) से ज्यादा कुछ भी नहीं देती। आज हमें अपनी दौड़ती भागती जिन्दगी में ऐसा खाना चाहिए जो बस दो मिनट में ही तैयार हो जाए। अगर हम एक Line में कहे तो Fast to Cook पर हम शायद ही ये सोच पाते हैं कि हम सच में आहार नहीं बल्कि "बीमारियों का भण्डार" खा रहे हैं जो हमारे शरीर के अंदर जाकर "जहर" घोल रहा है न तो इसके द्वारा हमारे शरीर में शुद्ध रक्त बनता है और न ही हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। हाँ लेकिन इस बात में कोई शक नहीं है कि में खाना बहुत ही स्वादिष्ट होता है और इसके स्वाद और जल्दी बनने के कारण ही ये आज ये लोगों की पहली पसन्द बनता जा रहा है क्योंकि आज किसी के पास भी इतना समय नहीं है कि वो बैठकर ये सोचे कि हम अपने आहार में ऐसा क्या लें जो हमारे शरीर के लिए हमारे पूरे शारीरिक तत्र के लिए जरुरी और अच्छा है। पाश्चात्य भोजन का कार्य और अर्थ बहुत ही छोटा है लेकिन हम मनुष्यों के संदर्भ में आहार का अर्थ पर्याप्त विस्तृत है।

आहार का एकमात्र उद्देश्य केवल भूख मिटाना और स्वादिष्ट भोजन करना नहीं हैं। वास्तव में आहार के विभिन्न उद्देश्य हैं। मनुष्य की भूख मिटाने के साथ–साथ आहार उसके शारीरिक कार्यो के लिए शाक्ति प्रदान करता है। आहार शरीर की वृद्धि एंव विकास के लिए भी आवश्यक है। शरीर के रख–रखाव के साथ ही साथ विभिन्न रोगों से मुकाबला करने के लिए भी आहार ही हमें शक्ति देता है।हम जो आहार लेते हैं उसी के द्वारा हमारे शरीर में नए और शुद्ध रक्त का निर्माण होता है। रक्त शरीर की परिसंचरण क्रिया द्वारा प्रत्येक कोशिका को निर्धारित भोजन पहुँचाता है। यदि हमारे शरीर को पुष्ट रखने के लिए उचित तत्व होंगे तो हमारा शरीर हृष्ट–पुष्ट बना रहेगा। अन्यथा अस्वस्थता के लक्षण स्पष्ट दिखाई देने लगेंगे। हमारे शरीर को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए हमें उचित आहार की जरुरत होती है। ऊर्जा एवं ऊष्मा तथा कोशिकाओं के निर्माण के लिए भोजन अत्यन्त आवयश्यक है। वास्तव में हमारे शरीर में आहार की आवश्यकता बहुपक्षीय है।

मनुष्य एक विवेकशील प्राणी है उसे ये सोचना चाहिए कि शरीर को निरोग बनाए रखने के लिए कुछ भी खाकर भूख शान्त करना पर्याप्त नहीं होता। हमें इस बात का भी ज्ञान होना चाहिए कि कौन सा भोजन हमारे लिए उपयोगी है और कौन सा अनुपयोगी।अतः शरीर को सुरक्षा देने उसे गतिशील बनाए रखने और पोषण प्रदान करने के लिए सिर्फ भोजन नहीं बल्कि "आहार" की जरुरत होती है और "आहार" से तात्पर्य हमारा अपने भारतीय भोजन से है। हमारे पास हमारे देश की ऐसी बहुत सी चीजें हैं जो अतुल्य है और जिनके आगे पूरी दुनिया हम भारतीयों का लोहा मानती है और सिर झुकाती है, जैसे योग, भारतीय आहार और अब India Intelligence भी। पर फिर भी न जाने क्यों हम अपने देश के अतुल्य खजाने को छोड़कर पाश्चात्य की तरफ भाग रहें है जों कि ठीक नहीं है। मनुष्य को विवेकशील प्राणी इसलिए कहा जाता है क्योंकि वो ये बहुत अच्छे से जानता है कि उसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। हमारे उपनिषदों में भी अन्न को 'ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। उपनिषद कहता हैं जैसा खाओगे अन्न वैसा बनेगा मन" अतः भोजन हमारे मन का भी निर्माण करता है।

अतः हमें भोजन उचित मात्रा में उचित समय पर और उचित मौसम के अनुकूल करना चाहिए।

❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें-

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

'लोभी नाई'

मामा की कलम से.....

श्री विजय शर्मा

यह सुनकर राजा हिरण्यगर्भ बोला, "सर्वज्ञ मन्त्री! अब क्या करना चाहिए?"

चकवा बोला, "महाराज! अपनी सेना में निर्बल और बली का विचार कर अच्छा पुरस्कार देकर उनका मनोबल बढ़ाइये।"

नीति कहती है कि जो राजा अनुचित स्थान में पड़ी कौड़ी को भी बहुमूल्य जानकर उठा लेता है और सुअवसर पड़ने पर करोड़ों का धन भी उदार होकर बांट देता है। ऐसे श्रेष्ठ राजा को लक्ष्मी कभी नहीं छोड़ती। वैसी भी यज्ञ, विवाह शत्रुनाश, यशवृद्धि, मित्र के सम्मान, प्रिय स्त्रियों, निर्धन बान्धवों आदि आठ बातों में व्यय बेकार नहीं जाता। मूर्ख थोड़े खर्च के डर से सर्वनाश कर बैठता है। बुद्धिमान राज्यभय से अपनी दुकान के द्रव्य आदि को कभी नहीं छोड़ता है।"

राजा हिरण्यगर्भ अपने धन का एक हिस्सा भी किसी तरह खर्च करना हीं चाहता था। इसका कारण यही था कि उसकी सेना युद्ध में विजयी होती जा रह थी, उसे हर्ष हो रहा था कि अब तो वह एक–दो दिन में बिना कुछ गंवायें युद्ध में विजय की पताका फहरा ही देगा। तब वह क्यों अपना धन खर्च करें? यही सोचकर राजा चकवे से बोले, "इस समय खर्च क्यों करना चाहिए? कहा भी है कि विपत्ति के नाश से बचने के लिए धन–संग्रह करना चाहिए।"

मन्त्री चकवा राजा की यह बात सुनकर कुछ विचार करता हुआ बोला, "महाराज! धनी को आपत्ति कहां?"

"जो लक्ष्मी चली जाए तो......।" राजा बोला।

चकवा राजा का प्रश्न सुनकर तीर्व स्वर में बोला, "वैसे ही संचित धन भी नष्ट हो जाए तो.....?" अतः मेरा मानना है कि आप कृपणता को छोड़कर अपने शूरवीरों को दान और मान से सम्मानित कीजिए।

नीति भी कहती है कि जो दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति और अवनति में अपनी अवनित समझता है, वैसे विश्वासपात्र को अपने प्राण और धन की रक्षा में लगाना चाहिए।

जिस राजा का मन्त्री, पत्नी और पुत्र धूर्त हों, उसे अन्याय की प्रचण्ड आंधी उसी तरह विपत्ति के भंवर में डाल देती है जिस तरह समुद्र में नौका को तूफान।

जो राजा हर्ष और शोक में एकसमान रहता है, जिसे शास्त्रों के वचनों पर विश्वास है, सेवकों का बराबर ध्यान रखता है, उसकी राज्य भूमि सोना उगलती है। जिस राजा की उन्नति–अवनति मन्त्री के साथ जुड़ी हो उसका कभी अपमान नहीं करना चाहिए।

मन्त्री चकवा और राजा में वार्तालाप चल रहा था, तभी मेघवर्ण कौए ने आकर कहा, "महाराज! जरा हम पर दृष्टि डालिए। इस समय शत्रु सिर पर आन पड़ा है। आप आज्ञा दें तो मैं किले से बाहर निकलकर अपना पराक्रम दिखाऊं। ऐसे अवसर में ही अपना कर्ज मैं चुका सकता हूं।"

चकवे ने कौवे की बात सुनी, उसे हडबड़ाया देखकर, मेघवर्ण कौए का क्रोध ओर उत्तेजना को परखकर वह राजा हिरण्यगर्भ को सुझााव देने के उद्देश्य से कुछ सोचने लगा। वह सोच रहा था कि यदि शत्रु राजा हमारे किले के अन्दर घुस आया तो हमारी जान बचने की कोई आशा न रहेगी। उसे यही चिन्ता होने लगी थी–शत्रु हमें बन्दी बना लेगा, राजा भी बन्दी बनाये जायेंगे और हम भी कारागार में डाल दिए आयेंगे।चकवा राजा की ओर देखते हुए और उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हुए बोला, "महाराज! जैसे पानी से बाहर निकलकर मगर विवश हो जाता है, वैसे ही शेर भी वन से निकलकर गीदड़ की तरह हो जाता है। महाराज! आप चलकर युद्ध देखिए। सेना की पीठ पर रहकर राजा को युद्ध का संचालन करना चाहिए, क्योंकि स्वामी के साथ होने पर कुत्ता भी शेर हो जाता है।"राजा ने चकवे की बात सुनी और कुछ सोचने लगा– उसे मेघवर्ण कौए से कहा, "कौए! आप अपना क्रोध कम कीजिए–क्रोध से अपना ही नाश होता है। अतः हमें धैर्य से काम लेना चाहिए। जो बात चकवे महाराज बता रहे हैं, हमें इनकी बात मान लेनी चाहिए।"कौआ बोला, "महाराज! आपकी इच्छा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। आपकी इच्छा में ही हमारी इच्छा निहित है। अतः आप जो कह रहे हैं मैं समझ रहा हूं।"

कौआ बोला, "महाराज! आपकी इच्छा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। आपकी इच्छा में ही हमारी इच्छा निहित है। अतः आप जो कह रहे हैं मैं समझ रहा हूं।"

चकवा चाहता था कि शत्रु राजा की सो यदि किले के द्वार पर

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

आती है तो हम उस पर ऊपर से हमला करेंगे—क्योंकि शत्रु पक्ष की सेना हमसे नीचे होगी, अतः वह मारी जाएगी और परास्त होकर भाग जाएगी या हमारी सेना के सेनापति उन्हें बन्दी बना लेंगे।

यही हुआ—एक गुप्तचर ने आकर बताया—"महाराज! शत्रु की सेना किले के द्वार पर आ पहुंचती है। आप कुछ करिये।"

राजा हिरण्यगर्भ, मन्त्री चकवा और कौआ तुरन्त किले के द्वार की तरफ बढ़े और घमासान युद्ध में जुट गये।अगले दिन चित्रवर्ण ने मन्त्री गिद्ध से कहा, "तात! अब तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी कीजिए।"

राजा चित्रवर्ण युद्ध में थक चुके थे, अतः अब वह किले पर अपना झण्डा फहराना चाहते थे। इसलिए वह उत्सुक हो रहे थे कि अब तो गिद्ध की बताई रणनीति पर चलकर हम विज की कगार पर आ ही पहुंचे।गिद्ध ने कहा, "राजन! पहले आप किले के दोषों को जान लीजिए। बहुत दिनों तक घेराबन्दी को सह पाने की असमर्थता, मूर्ख और व्यसनी सेनापतियों के हाथों में रक्षा का भार प्रबन्धों में त्रुटियों और कायर सैनिकों की नियुक्ति ये दोष आपको शत्रु के किले में नहीं मिलेंगे। अब किले को जीतने के चार उपाय जान लीजिए—किले के भीतरी सैनिकों में फूट डाली जाए, घेराबन्दी को लगातार कसा जाए अचाक शत्रु पर बार—बार हमला बोला जाए और जान हथेली पर लकर साहस और उत्साह साहित युद्ध लड़ा जाए। अब आपको पूरे उत्साह और बल सहित शत्रु पर धावा बोल देना चाहिए।"

इतना कहकर धीरे—धीरे राजा के कान में कुछ कहा, "ऐसा ही करना चाहिए।" गली सुबह अभी सूर्य भी नहीं उगा था कि किले चारों द्वारों पर युद्ध छिड़ गया। इसी बीच कौऐ ने किले के भीतर आग लगा दी। शोर उठा—"किला ले लिया! किला जीत लिया।"

शोर सुनकर और किले के चारों ओर धधकती आग देखकर राजहंस की सेना के शूरवीर और किले में रहने वाले शीघ्र सरोवर में जा घुसे। आपत्ति में सही सलाह, भरपूर पराक्रम और प्राण—रक्षा के उपायों पर तुरन्त अमल करना पड़ता है। ऐसे समय में अधिक सोचने—विचारने की जरुरत नहीं होती।राजहंस तो स्वभाव से ही सुस्त और धीरे चलने वाला था। उसके साथी सारस को चित्रवर्ण के सेनापति मुर्गे ने आकर घेर लिया।हिरण्यगर्भ ने सारस से कहा, "हे सेनापति! मेरे लिए स्वयं को क्यों मारता है? तू अभी बचकर जा सकता है, इसलिए जाकर जल में घुस जा और अपनी रक्षा कर ले। सर्वज्ञ से सलाह लेकर मेरे पुत्र चूड़ामणि को राजा बना देना।"

सारस बोला, "राजन! आप ऐसी दुःखदायी बात क्यों कहते हैं? हम सब तो यही चाहते हैं कि जब तक आकाश में सूर्य—चन्द्र हैं तब तक आप विजयी बने रहें। मैं किले का अधिकारी हूं शत्रु मेरी लाश पर से गुजकर ही किले में जा सकता है। वरना नहीं। मैंने तो यही सुना है दाता, क्षमाशील स्वामी बड़े भाग्य से मिलता है।"

राजा बोला, "कह तो ठीक रहे हो! नेक, सच्चा, चतुर और स्वामी को चाहने वाला सेवक भी तो कठिनता से मिलता है।"

"महाराज! यदि युद्ध को छोड़कर जाने से मृत्यु का भय न हो तो अन्य स्थान पर जाना ठीक है, किन्तु मृत्यु होनी ही है तो व्यर्थ में अन्यत्र जाकर, अपयश क्यों कराया? वायु से उड़ी हुई लहरों के खेल की तरह जीवन क्षणभंगुर है। तब मरने से क्यों डरुं! दूसरों के लिए प्राण त्यागने का अवसर तो बड़े पुण्य से मिलता है। राजा, मन्त्री, देश, किला कोश, सेना, मित्र और प्रजा राज्य के आठ अंग है। आप स्वामी हैं इसलिए आपकी रक्षा होनी चाहिए। राजा के बिना धन—धान्य से परिपूर्ण प्रजा भी निराश्रित रहती है। प्रजा का जीवन तो उसका राजा होता है। जीवन ही न शेष हो, तो रोगी को धनवन्तरी वैद्य भी नहीं बचा सकता। राजा से ही प्रजा जीवित है। राजा न रहे तो प्रजा भी नहीं रहती। प्रजा तो उन कमलों के समान है। जो सूर्य के उदयास्त के अनुरुप खिलता है। अतः यहां सबसे पहले आपकी ही रक्षा करनी चाहिए।" सारस ने कहा।

इतने में मुर्गे ने उछलकर राजहंस पर तीखे प्रहारों से हिरण्यगर्भ को घायल कर दिया। तभी सारस ने अपनी लम्बी चोंच से मुर्गे को बहुत मारा। सारस भी इस युद्ध में मारा गया। सारस ने मरने से पहले अपने पंखों से राजहंस को जल में जोर से धकेल दिया था। सारस ने बहुत पराक्रम दिखाया था। चित्रवर्ण ने किले में घुसकर वहां अपना कब्जा कर लिया। सेना के दास उसकी जय के गीत गाने लगे।चित्रवर्ण वहां का राजपाट लूटकर आनन्दित होकर अपने पड़ाव को लौट गया।"राजा हिरण्यगर्भ की सेना में एक सारस ही पुण्यात्मा था जिसने अपने शरीर को त्यागकर स्वामी की रक्षा की। गाय बैल की सूरत—शक्ल के अनेक बछड़े पैदा करती है, किन्तु ऐसे सांड को जिसके लम्बे—ऊंचे सींग हों कोई विरली गाय ही जानती है। जो बहादुर स्वामी को बचाने में स्वयं की बलि चड़ा देता है, सीधे स्वर्ग को जाता है। युद्धभूमि में शत्रुओं से वह घिरा हुआ वीर यदि कायरता न दिखाए तो अमर लोक को जाता है।"इतना कहकर विष्णु शर्मा बोले, "आप सब राजकुमारों ने विग्रह सम्बन्धी कहानियां सुनानी चाही थीं, सो मैं कह सुनाई।"

"विग्रह सुनकर हमें बहुत आनन्द आया।" सभी राजकुमार एक स्वर में बोले।"यह आनन्द दूसरों को मिले। यह प्रार्थना करो कि राजाओं की सो में कभी फूट न पड़ें, कभी युद्ध न हो। नीति और परामर्श की प्रचण्ड वायु शत्रुओं को उड़ा फैंके, ताकि उन्हें पहाड़ों की गुफाओं में छुपकर प्राण बचाने पड़ें।" विष्णु शर्मा राजकुमारों की बात सुनकर बोलें, "मेरे प्यारे राजकुमारों! विग्रह वह बला है जो एक बार परिवार में घुस जाए तो सदियों तक निकलने का नाम नहीं लेती और कई—कई पीढ़ी तक बड़े—बड़े शूरवीरों को खाती रहती है।

मैं तो बस अन्त में यही कहूंगा कि हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि यह विग्रह कभी किसी भी परिवार में न घुसे। ❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

शेष पेज 4 से आगे............

व्यवस्था बनानी चाहिए। संक्षेप में साधना का महत्व एवं नियम समझाते हुए नीचे लिखे क्रम से उपचार कराएं–

1. षट्कर्म **2.** यज्ञोपवीत परिवर्तन जो यज्ञोपवीत न पहने हों, उन्हें नवरात्रि साधना के लिए अस्थाई यज्ञोपवीन दिया जा सकता है। **3.** तिलक, कलावा **4.** कलश स्थापना–दीप प्रज्जवलन, पूजन **5.** सर्वदेव आवाहन, पूजन–नमस्कार। यदि समय की सुविधा हो, तो षोड्शोपचार पूजन पुरूष सूक्त से भी कराया जा सकता है। **6.** स्वस्तिवाचन **7.** अनुष्ठान संकल्प **8.** सिंचन–अभिषेक एवं **9.** पुष्पांजलि।

जप के समय दीपक एवं अगरबत्ती आदि जलाये रखें। अखंड दीपक आवश्यक नहीं। अखंड जप या दीपक रखने की भावना और स्थिति हो, तो प्रातःकाल से लेकर सायंकाल आरती तक रखा जाना पर्याप्त है। शाम को सामूहिक गायत्री चालीसा गान, प्रेरक भजन, कीर्तन, प्रज्ञा, पुराण वाचन, जैसे सत्संग क्रम चलाये जाएं। अंत में आरती करके समापन किया जाय।

नौवें दिन सामूहिक पूर्णाहूति की व्यवस्था की जाए। एक, पांच, नौं जैसे भी स्थिति हो, तदनुरुप वेदियां बनाकर यज्ञ किया जाए। सामूहिक क्रम में आहुतियों की संख्या का बंधन नहीं होता। पूर्णाहुति में सुपारी अथवा नारियल के गोले का उपयोग किया जाना चाहिए।

पूर्णाहुति के बाद सामान्य प्रसाद वितरण करके समापन किया जा सकता है। यदि व्यवस्था हो सकें, तो सभी साधकों को अमृताशन (दलिया खिचड़ी जैसे भगौनी मे पकाने योग्य पदार्थ) का भोजन कराकर, प्रसाद से उपवास की समाप्ति की व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।

अनुष्ठान के साथ दान की परंपरा जुड़ी हुई है। ज्ञान दान सर्वश्रेष्ठ है। इस दृष्टि से प्रत्येक साधक को चाहिए कि यथाशक्ति वितरण योग्य सस्ता युग साहित्य खरीदकर उन्हें उपयुक्त व्यक्तियों को साधना का प्रसाद कहकर दें। पढ़ने और सुरक्षित रखने का आग्रह करें। अनुष्ठान के बाद इस प्रक्रिया को श्रेष्ठदान एवं ब्रह्मभोज के समतुल्य माना जाता है। यज्ञ पूर्णाहूति के साथ ही इसे सुनिश्चित मात्रा में करने का संकल्प करना चाहिए। पूर्णाहूति के बाद विर्जजन करें।

नवरात्र

शक्तिस्वरुपा भगवती दुर्गा की आराधना का महापर्व

भारतीय आध्यात्म में मां दुर्गा आदि शक्ति के रुप में प्रतिष्ठित भक्तों के कष्टों को पल भर में हरने वाली हैं। पुराणों में उन्हें प्रकृति, पराशक्ति, योगेश्वरी, योगमाया, योगनिद्रा आदि नामों से विभूषित किया गया हैं ये महाशक्ति ही विभिन्न लीलाएं करती हैं। साधारण व्यक्ति द्वारा इन्हें जान पाना अत्यंत दुर्गम है, इसलिए ये दुर्गा कहलाती है। नवरात्र में नौ रुपों मं मां भगवती की उपासना की जाती है। नवरात्र देवपर्व है, उसमें देवत्व की प्रेरणा और देवी अनुकम्पा बरसती है। जिस प्रकार प्रातःकाल का उपासना अधिक फलीभूत होती है और संध्या के नाम से अभिहित की जाती है, उसी प्रकार नवरात्रियों का समय भी विशेष फल देने वाला माना गया है। मंत्र क्रिया और भक्तिहीन मनुष्यों के लिए ये नवरात्र शक्ति की पाठशालाएं हैं। मनुष्य अनन्त शक्तियों का भंडार है। आवश्यकता है मात्र उसे जगाने की। नौ रूपों में मां दुगा की उपासना इसलिए की जाती है ताकि वह हमारी इन्द्रिय चेतना में समाहित समस्त अवगुणों को नष्ट कर दें। मार्कण्डेय पुराण में नव दुर्गाओं के नाम एवं क्रम का उल्लेख विभिन्न प्रकार से मिलता है। जिनकी नवरात्र में आराधना करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। ये नवदुर्गा इस प्रकार है।

1. शैलपुत्री :– मां का शैलपुत्री नाम पर्वतराज हिमालय की पुत्री होने से पड़ा है। सती द्वारा यज्ञ अग्नि में स्वयं को भस्म करने के पश्चात ये पर्वतराज हिमालय की पुत्री पार्वती के रुप में जन्मीं। मां शैलपुत्री वह शक्ति हैं, जो हमें साधना में लीन होने की शक्ति, साहस एवं बल प्रदान करती है। इनकी स्तुति इस रूप में की जाती है।

वंदे वांछितंलाभय चन्द्रार्थ त शेखरम् ।
वृषारूढ़ा शुलरुढ़ा शुलधरां शैलपुत्रीं यशस्विनीम् ।।

2. ब्रह्मचारिणी :– सच्चिदानंद ब्रह्म की प्राप्ति हेतु तप में तत्पर देवी ब्रह्मचारिणी हैं। दाएं हाथ में जप की माला एवं बाएं हाथ में कमंडल है। मां भगवती जप, तप, साधना द्वारा हमें अपने लक्ष्य तक पहुंचने की प्रेरणा देती हैं, मां की स्तुति का मंत्र है–

दधानां कर पद्माभ्यां अक्षमाला कमण्डलुं ।
देवी पसीदतु कथि, ब्रह्मचारिण्युत्तमा ।।

3. चंद्रघंटा :– तीसरी शक्ति का नाम चंद्रघंटा है। मां चंद्रघंटा के मस्तक पर घंटाकर अर्द्धचंद्र है। इनकी चंद्रघंटे की ध्वनि से समस्त दानव एवं राक्षस भयभीत हो जाते हैं। इनके हाथों में दस प्रकार के अस्त्र–शस्त्र हैं। इनके ध्यान का मंत्र है–

अंण्डज प्रवरारूढ़ा चंड कोपार्यरीयुता ।
प्रसादं तनुतां मध्य चंड स्वंडेति विश्रुता ।।

4. कूष्माड़ा :– कूष्माड़ा मां भगवती ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति का कारण हैं। इसलिए इन्हें कूष्माण्डा के नाम से जाना जाता है। त्रिविध तापयुक्त संसार जिनके उदर में स्थित है, वे ही कूष्माण्डा हैं। इनके सात भुजाओं में अस्त्र तथा दाहिने हाथ में जप की माला हैं। ये सिंह पर आरुढ़ हैं। मां साधना में रत साधकों तेज प्रदान करती हैं। मां कूष्माण्डा का ध्यान इस मंत्र से किया जाता है।

सुरा संपूर्ण कलशं यधिरा प्लुतमेव च ।
दधाना हस्त पदमाभ्यां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे ।।

5. स्कंदमाता :– पांचवां दिवस मां स्कंदमाता के पूजन का दिवस है। मां कुमार कार्तिकेय स्कंद की माता हैं। इसलिए वे स्कंदमाता कहलाती हैं। ये शुभ्रवर्णा हैं। पद्मासससन पर विराजमान इनकी गोद में स्कंद बैठे हुए हैं। मां साधक के ह्रदय को परम शांति प्रदान करती हैं। इनके ध्यान का मंत्र हैं–

सिंहासनगता नित्यं पद्माचित कर द्वया ।
शुभदास्तु सदा दैवी स्कंदमाता यशस्विनी ।।

6. कात्यायनी :– ऋषि कात्यापन की प्रार्थना पर पुत्री रुप में उनके आश्रम में अवतीर्ण होने वाली मां कात्यायनी कहलाती हैं। ये स्वर्णमय दिव्य स्वरुप वाली, तीन नेत्र एंव आठ भुजायुक्त हैं तथा सिंह पर आरुढ़ हैं। ये साधक को दैवीय शक्तियों से पूर्ण करने वाली हैं। इनके ध्यान का मंत्र हैं–

चंद्रहासोज्वलकरा शार्दूल पर वाहना ।
कात्यायनी शुभ दद्यात् दैवी दानवघातिनी ।।

7. कालरात्रिः– माँ दुर्गाजीकी सातवीं शक्ति कालरात्रि के नामसे जानी जाती हैं। इनके शरीर का रंग घने अन्धकार की तरह एकदम काला है। सिरके बाल बिखरे हुए हैं। गले में विद्युत् की तरह चमकने वाल माला है। इनके तीन नेत्र हैं। ये तीनों नेत्र ब्रह्माण्ड के सदृश गोल हैं। इनसे विद्युत् के समान चमकीली किरणें निःसृत होती रहती हैं। इनकी नासिका के श्वास–प्रश्वास से अग्नि की भयंकर ज्वालाएँ निकलती रहती हैं। इनका वाहन गर्दभ–गदहा, है। ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ की वरमुद्रा से सभी को वर दान करती हैं। दाहिनी तरफ का नीचे वाला हाथ अभयमुद्रा में है। बायी तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का काँटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग (कटार) हैं।

माँ कालरात्रि का स्वरुप देखनें में अत्यन्त भयानक हैं, लेकिन ये सदैव शुभ फल ही देने वाली हैं। इसी कारण इनका एक नाम 'शुभक्ङरी' भी है। अतः इनसे भक्तों को किसी भी भयभीत अथवा आतकि्त होने की आवश्यकता नहीं है।

दुर्गापूजा के सातवें दिन माँ कालरात्रि की उपासना का विधान है। इस दिन साधका का मन 'सहस्त्रार' चक्र में स्थित रहता है। उसके लिये ब्रह्माण्ड की समस्त सिद्धियों का द्वार खुलने लगता है। उनके साक्षात्कार से मिलने वाले पुण्य का वह भागी हो जाता है। उसके समस्त पापों–विघ्नों का नाश हो जाता है। इनके ध्यान का मंत्र हैं–

एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी।।
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टकभूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयक्ङरी।।

8. महागौरीः– माँ दुर्गाजी की आठवीं शक्ति का नाम महागौरी है। इनका वर्ण पर्णतः गौर है। इस गौरता की उपमा शंख, चन्द्र और कुन्द के फूल से दी गयी है। इकी आयु आठ वर्ष की मानी गयी हैं– 'अष्टवर्षा भवेद् गौरी'। इनके समस्त वस्त्र एवं आभूषण आदि भी श्वेत हैं। इनकी चार भुजाएँ हैं। इनका वाहन वृषभ है। इनके ऊपर के दाहिने हाथ में अभय–मुद्रा और नीचे वाले दाहिने हाथ में त्रिशूल है। ऊपर वाले बायें हाथ में डमरु और नीचे के बायें हाथ में वर–मुद्रा है। इनकी मुद्रा अत्यन्त शान्त है।

दुर्गापूजा के आठवें दिन महागौरी की उपासना का विधान है। इनकी शक्ति अमोघ और सद्यः फलदाहिनी है। इनकी उपासना से भक्तों के सभी कल्मष धुल जाते हैं। उसके पूर्वसंचित पाप भी विनष्ट हो जाते हैं। भविष्य में पाप–संताप, दैन्य–दुःख उसके पास कभी नहीं आते। वह सभी प्रकार से पवित्र और अक्षय पुण्यों का अधिकारी हो जाता है। इनके ध्यान का मंत्र हैं–

श्वेते वृषे समारुढा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेवप्रमोददा।।

9. सिद्धिदात्रीः– प्रत्येक मनुष्य का यह कर्त्तव्य है कि वह माँ सिद्धिदात्री की कृपा प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न करे। उनकी आराधना की ओर अग्रसर हो। इनकी कृपा से अनन्त दुःख रुप संसार से निर्लिप्त रहकर सारे सुखों का भोग करता हुआ वह मोक्ष को प्राप्त कर सकता है।

नव दुर्गाओं में माँ सिद्धिदात्री अन्तिम हैं। अन्य आठ दुर्गाओं की पूजा–उपासना शास्त्रीय विधि–विधान के अनुसार करते हुए भक्त दुर्गा–पूजा के नवें दिन इनकी उपासना में प्रवृत्त होते हैं। इन सिद्धिदात्री माँ की उपासना पूर्ण कर लेने के बाद भक्तों और साधकों की लौकिक–पारलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है। लेकिन सिद्धिदात्री माँ के कृपापात्र भक्त के भीतर कोई ऐसी कामना शेष बचती ही नहीं है, जिसे वह पूर्ण करना चाहे। वह सभी सांसारिक इच्छाओं, आवश्यकताओं और स्पृहाओं से ऊपर उठकर मानसिक रुप से माँ भगवती के दिव्य लोकों में विचरण करता हुआ उनके कृपा–रस–पीयुष का निरन्तर पान करता हुआ, विषय–भोग–शून्य हो जाता है। माँ भगवती का परम सान्निध्य ही उसका सर्वस्व हो जाता है। इस परम पद को पाने के बाद उसे अन्य किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं रह जाती। है। इनके ध्यान का मंत्र हैं–

सिद्धगन्धर्वयक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि।
सेव्यमाना सदा भूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।। ❋❋❋

शेष पेज 06 से आगे...............

साष्टांग दण्डवत किया व नेत्रों में असु भर लिये। मैं मरुँगा ऐसा बारम्बाार कहते हुऐ हे नारदजी वह मलमास लक्ष्मीपति को ऐसा कहकर शांत होकर गिर पड़ा उसको इस तरह पछाड खाता देखकर सम्पूर्ण सभा विस्मय करने लगी। नारयण कहने लगे–उस समय वह अधिक मास ज्यों ही गिरकर चुप हुआ गौलोक स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्ण भगवान दया से भर उठे। और उसे आसन पर बैठाकर भगवान दया से भर उठे। और उसे आसन पर बैठा कर वरदान दिया। अधिक मास को भगवान पुरुषोत्तम ने अपना नाम 'पुरुषोत्तम मास' नाम दिया तथा इसके स्वामी स्वंय पुरुषोत्तम है कहा– जो भी प्राणी पुरुषोत्तम मास का सेवन करेगा उसके सारे पाप नष्ट होंगे। बहुत से धन से तो होने वाले अनेकों धर्म है किन्तु पुरुषोत्तम मास में किया थोडा धर्म भी महान हो जाता है। प्रातःकाल उठकर नित्य कर्म करे फिर श्रीकृष्ण को हृदय में स्मरण करके भक्तिपूर्वक उपवास रखे, रात्रि भोजन करें। श्रीमद्भागवत की कथा इस मास में सुने, इसके पुण्य को ब्रह्मभी नहीं कह सकते है। श्रीपुरुषोत्तम में लाख तुलसी दल से शालिग्राम भगवान का पूजन करे उसका पुण्य है। इस प्रकार नियमानुसार व्रत करने वाले पुरुष को देखकर यमदूत भी भाग जाते है। यह व्रत सैकड़ों यज्ञो से श्रेष्ठ है पृथ्वी में जितने तीर्थ क्षेत्र है वह देवताओं सहित मनुष्य के शरीर में निवास करते है।

द्रुपद कन्या दोपदी ने पुरुषोत्तम मास की अवहेलना की थी दुशासन ने जिसे चुटिया पकड़कर खींचा था हे राजन! उस समय मैने इसकी ओर ध्यान नहीं दिया था किंतु जब प्रेम से मुझे बार–बार पुकारा और कष्ट में पड़कर मेरी शरण ली मैं चाहे उसे भुला चुका था तब उसकी प्रार्थना सुनकर द्रोपदी की लाज रखी। पुरुषोत्तम मास के विरोधी को मैं गिरा देता हूँ। इसलिये अब आगामी पुरुषोत्तम मास की सेवा तुम करो। चौदह वर्ष पूरा होने पर तुम्हारा कल्याण होगा। श्री नारायण बोले–श्रीकृष्ण के द्वारका चले जाने पर पांडवों ने पुरुषोत्तम मास आने पर उसका व्रत नियम पालन किया अन्त में भगवान कृष्ण से चौहद वर्ष पूर्ण होने पर उन्होने निष्कटंक राज्य प्राप्त किया। इससे प्रथम दृढधन्वा सूर्यवंशी राजा व्रत के प्रभाव से सुखसमृद्धि, पुत्र पौत्रादि अनेकों भोगों को भोगकर भगवान के लोक को प्राप्त हुआ। हे मुनि! इस मास का महात्म्य करोंड़ो कल्प बीतने पर भी मुझसे कहने की सामर्थ नहीं है। श्री सूतजी बोले–यह सब सुनकर श्री नारायण मौन हो गये, तब श्री नारदजी ने उन्हें प्रणाम किया। मनुस्मृति में कहा गया है कि तीर्थ, श्राद्ध, दर्ष्श श्राद्ध, प्रेता श्राद्ध, सपिण्डीकरण, चन्द्र–सूर्य ग्रहण स्नान अधिक मास में करने चाहिये।

अधिक मास फल– चैत्र महीना अधिक होने पर कल्याण, आरोग्य और कामनाओं की पूर्ति होती है। वैशाख मास अधिक होने पर सुभिक्ष, सुंदर, वर्ष होता है लेकिन ज्वर और अतिसार की सम्भावना होती है। ज्येष्ठ मास अधिक होने पर लोगों को कष्ट होता है। लेकिन यज्ञ और दानादि अधिक होते है जब आषाण मास दो होते है तो पुण्य, यश, सुभिक्ष होता है जिस वर्ष श्रवण मल मास होता है उस वर्ष समृद्धि और सुद्रों की वृद्धि होती है। भाद्रपद मास अधिक मास होने पर विद्रोह और युद्ध होता है। आश्विन मास अधिक होता है तो दूसरे के शासन और चोरों से जनता दुःखी, सुभिक्ष, कल्याण, आरोग्य, दक्षिण में दुर्भिक्ष राजाओं का नाश और ब्राह्मणों की वृद्धि होती है। अगहन मास मल मास होता है तो सुभिक्ष आता है और समस्त जनता स्वस्थ रहती है। फाल्गुन मास अधिक होने पर सत्ता परिवर्तन होता है तथा सुभिक्ष और खुशहाल आती है। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे...............

करने या छिपाने के अनेकों तरीके प्रचलित हो रहे हैं।

त्वचा के इन धब्बों को अनेकों नामों से जाना जाता है। मूलतः ये नाम इनके रंग, आकार और त्वचा पर पड़ने वाले इनके प्रभावों के आधार पर प्रचलित हुए है। मैं यहाँ इनको तिल या धब्बे के नाम से संबोधित कर रहा हूं। सामुद्रिक शास्त्र में इस बात का कोई महत्व नहीं है कि आपके क्षेत्र में इनको क्या नाम दे रखा है, यह भी सम्भव है कि इनके आकार–प्रकार के आधार पर इनका नामकरण कर दिया गया हो।

तिल या धब्बा अनेक रंगों में हो सकता है। प्रायः उस तिल को अच्छा नहीं समझा जाता है जो त्वचा के उस भाग पर हो जो कि हमेशा खुला रहता हो, जैसे चेहरा या बाहों विशेष रुप से चेहरे के धब्बों को खूबसूरती नष्ट करने का दोषी माना जाता है।

तिल त्वचा पर सपाट या उभरे हुए भी हो सकते हैं। जो तिल उभरे हुए हों वे अपना दुष्प्रभाव ज्यादा गंम्भीरता से दिखाते हैं। उभरे हुए तिलों पर कई बार काले बाल निकलने लगते है जो कि और भी नुकसादेह हो सकते है प्रायः इनको मस्सा कहा जाता है।

तिल या धब्बे और सामुद्रिक शास्त्र- सामुद्रिक शास्त्र के प्रमुख ग्रंथो में तिलों का बहुत ही रोचक वर्णन मिलता हैं यह इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन आचार्य त्वचा के धब्बों आदि से न केवल पूर्णतः परिचित थे, बलिक वे इनके आधार पर विभिन्न भविष्य वाणियाँ भी करते थे। यद्यपि यह अलग तथ्य है कि वर्तमान में पारंपरिक सिद्धान्त उतना महत्व नहीं रखते हैं मैं यहाँ केवल उन्हीं नवीन सिद्धांतों के बारे में चर्चा करुंगा, जो कि पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

जिन लोगों के चेहरे पर गहरे धब्बे हों उनके जन्मांग के लग्न में एक या अधिक पापग्रह स्थित होते हैं विशेष बात यह है कि ये पाप ग्रह न केवल नैसर्गिक पाप ग्रह होते हैं बल्कि तत्कालिक रुप से भी पाप ग्रह हो सकते हैं। इसका इनके जीवन पर गहरा प्रभाव होता है। बहुत सम्भव है कि इनको कोई गम्भीर बीमारी प्रौढ़ा वस्था मे ही जकड लें। लग्न में पाप ग्रह होने से जीवन प्रायः सहज नहीं रह पाता है। जिन लोगों की नाक पर काला तिल या धब्बा हो वे रुपये के मामले में बहुत ही अडियल रुख अपनाते हैं। धन के संबंध में इनका नजरिया बहुत साफ और कड़ा होता है। बुरी बात यह है कि ये अपने धन को प्राप्त करने में किसी भी हद तक जा सकते है, लेकिन दूसरे के धन को बहुत सहज लेते हैं, प्रायः समाज में प्रतिष्ठा कम ही होती है।

होंठों पर तिल होने पर व्यक्ति मिलनसार और भावुक होता है। शरीर पर आकार में बड़े तिलों की अधिक मात्रा होना जीवन में परेशानियाँ बढ़ाता है। होंठों और नाक के मध्य तिल का होना व्यक्ति को सौंदर्य प्रेमी बनाता है।

तर्जनी अंगुली पर तिल होने से शिक्षा में व्यवधान आते हैं। मध्यमा अंगुली पर तिल या धब्बा होने से भाग्योदय में बिलंब होता है। अनामिका अंगुली पर तिल होना सामाजिक प्रभाव में न्यूनता लाता है।

बुध की अंगुली कनिष्ठिका पर तिल होना व्यक्ति को स्वार्थी बनाता है। यदि कनिष्ठिका अंगुली आकार में छोटी हो तो जातक अब्बल दर्जे का बाल की खाल निकालने वाला और मितव्ययी होता है।

अंगूठा जहां हथेली से संलग्न है, उसके पास शुक्र के स्थान पर काला धब्बा होने से जातक को संतान प्राप्ति में बाधा उत्पन्न होती है। कुछ मामलों में व्यक्ति यौन रोगों से ग्रस्त भी हो सकता है।

मस्तष्क पर बड़ा काला चिंह होने से जातक का भाग्योदय 40 वें वर्ष के उपरांत होता है। बाह पर काला चिहन होने से जातक का भाइयों से संबंध कलहपूर्ण होता है। छाती पर काला चिंह होने से जातक बाल्यवस्था में रोग ग्रस्त रहता है। पेट पर काला तिल होने संतान का सुख न्यूनतम मिलता है।

दी गई तालिका देखें यहाँ तीन तरह की त्वचा के बारे में बताया गया है।

क्र.	**त्वचा के प्रकार**	**पहचान**	**परिणाम**
1.	**सूक्ष्म त्वचा**	**पतली**	**विचारशीलता**
2.	**स्थूल त्वचा**	**मोटी**	**परिश्रमी**
3.	**मिश्रित त्वचा**	**पतली और मोटी के मध्य की**	**योजनाऐं बनाना और उनका क्रियान्वयन करना**

जिन लोगों की त्वचा मिश्रित होती है, वे परिपव मस्तिक क्षमता के धनी होते हैं। इनके कार्यों में दीर्घ अनुभवशीलता झलकती है। छोटी उम्र में ही लोग उनके मस्तिष्क का लोहा मानने लगते है।

जिन लोगों की त्वचा सूक्ष्म होती है, उनके मस्तिष्क में विचार शीलता ज्यादा हावी रहती है। इनकी मस्तिष्क की क्षमता को आप इसीलिए कम करके आंक सकते है। क्योकि इनमें व्यवहारिकता का अभाव होता है।

जब मोटी त्वचा के किसी व्यक्ति की मस्तिष्क क्षमता का पता लगाना हो तो मानना चाहिए कि ऐसे लोगों में सहनशीलता का अभाव होता है। ये आपकी योजना पर कार्य कर सकते है। लेकिन परिणाम क्या होंगें इस बारे में इनका मस्तिष्क मौन होता है। ❋❋❋

शेष पेज 08 से आगे...........

के निमित्त घी से हवनादि कार्य किये जाते है और यह यात्रादि के दिन सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार किया गया श्राद्ध दैविक श्राद्ध कहलाता है।

11. **औपचारिक श्राद्ध**-ऐसा श्राद्ध जो शरीर की वृद्धि और पुष्टि के लिये सम्पन्न किया जाता है, औपचारिक श्राद्ध कहलाता है।

12.**सांवत्सरिक श्राद्ध**-यह श्राद्ध सभी श्राद्धों में श्रेष्ठ है और इसे मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर सम्पन्न किया जाता है। इसके महत्व का आभास भविष्य पुराण में वर्णित इस बात से हो जाता है जब भगवान् सूर्य स्वयं कहते हैं–

जो व्यक्ति सांवत्सारिक श्राद्ध नहीं करता है, उसकी पूजा न तो मैं स्वीकार करता हूँ, न ही विष्णु, न रुद्र और न ही अन्य देवगण ही ग्रहण करते हैं। अतः व्यक्ति को प्रयत्न करके प्रति वर्ष मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर इस श्राद्ध को सम्पन्न करना ही चाहिये।

जो व्यक्ति माता–पिता का वार्षिक श्राद्ध नहीं करता है उसे घोर नरक की प्राप्ति होती है और अन्त में उसका जन्म शूकर योनि में होता है।

इस प्रकार उपरोक्त तथ्यों एवं तर्को को जानकर यह स्पष्ट हो जाता है कि हमें अपने पूर्वजों एवं मृत परिवारजनों की शान्ति एवं तृप्ति के लिये, उनको मोक्ष की प्राप्ति हो इसके लिये, हमें उनका निरन्तर आशीष प्राप्त हो इसके लिये, श्राद्ध–तर्पण इत्यादि करने ही चाहिये।

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रूद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं। 500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262